

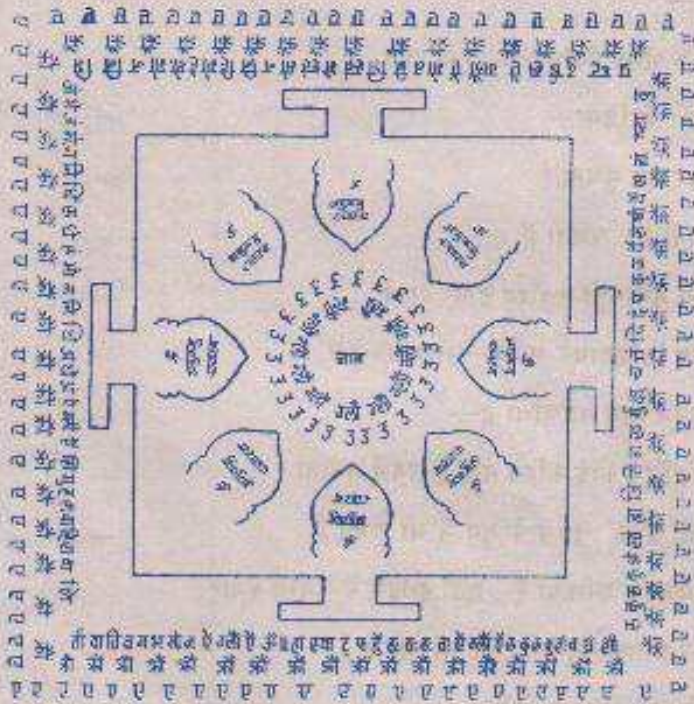
Pratap

May 87

मंत्र-तंत्र-संज्ञ विज्ञान



वार्ताली स्तम्भन यन्त्र



मई १९८७

विषय-सूची

* प्रार्थना—	१
* श्री बदुक भैरव प्रयोग—चन्द्रातिह पहल	२
* जिविर : सिद्धिया—	५
* समाचार एवं सूचनाएं	७
* कुण्डलिनी यों जगती हैं	८
* महादेव्यै नमोस्तुते—मोहन कुमार यादव	१३
* निश्चित सिद्धिदायक प्रयोग—योगेन्द्र निर्मोही	१६
* यह जीवन ज्ञान यज्ञशाला है—	२०
* स्वर्ण सिद्धि : कोई कठिन नहीं है स्वर्ण बनाना	२३
* परकाया प्रवेश : आज के युग में भी संभव है	२७
* आश्चर्यजनक शक्तियां हैं—छुटी इन्द्रिय में—सुरेश कुमार	३०
* वह पल प्रतिपल सुन्दर होती जा रही है	३६
* सौन्दर्य पाक निर्माण विधि	४०



वर्ष—७

अंक—५

मई १९८७

सम्पाद

तन्त्रिक

सं. सम्प

योगेन्द्र नि

सम्पाद

संज्ञ-संज्ञ-संज्ञ

डा० श्रीमाली

हार्कोर्ट कोलो

३४२००१ (रा)

टेलीफोन : २२

मुद्रक भरवि

वर्ष—७

अंक—१

मई १९८७

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विद्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय बुद्धिविद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ इन्द्रः ववो सूर्याय देवो रथ महो क्रिया एतावदान्यः

हे इन्द्र ! आप हमें सूर्य की तरह तेजस्वी बनावें हमारा
जीवन-रथ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता रहे और हम
जीवन पर्यन्त सक्रिय बने रहें ।

सम्पादक
नन्दकिशोर

स० सम्पादक
योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डा० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-
३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०६

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार पत्रिका का है, पत्रिका का वार्षिक विज्ञापक का मूल्य ही दो वर्ष के सदस्यता शुल्क के बराबर है, अतः धन्य सभी अंक, जब तक प्रकाशित हो, निःशुल्क सभी पत्रिका का दो वर्ष का सदस्यता शुल्क (१३०) रु०, एक वर्ष का (७०) रु० तथा एक अंक का मूल्य ३।५० रु० है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों में सम्पादक का सहमत होता अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को स्वयं सच, किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय तो इसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-सन्त होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा, और न इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर स्थलालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता हानि-नाश आदि की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होगी, तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मन्त्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित सामग्री के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की आपत्ति या धातोलता स्वीकार नहीं होगी, पत्रिका में प्रकाशित धार्मिक-वैदिक ग्रंथों का प्रयोग अपनी जिम्मेदारी पर ही करें योगी मन्वासी लेखकों के साथ विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है।

मुद्रक अरविन्द प्रकाशन डा० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

रोग शमनार्थ एवं पंच प्रयोग हेतु

श्री बटुक भैरव प्रयोग

तन्त्र-मन्त्र केवल उच्चकोटि के तान्त्रिकों की ही वसीती नहीं रही हैं, और वह भी सावरणक नहीं है, कि मन्त्र में बहुत पूजा पद्धति या मन्त्र चर्चा हो, कुछ साधनाएं ऐसी हैं, जो अपने आप में सिद्धिदायक एवं सफलतादायक हैं, जिनके लिए न तो किसी प्रकार के विधि विधान की जरूरत है न पूजा पद्धति की, न तो श्राद्ध बंध कर मन्त्र जप करने की आवश्यकता है, और न लम्बे घंटों आसन प्राणायाम आदि की।

बटुक भैरव साधना ऐसी ही तेजस्वी, शीघ्र सिद्धिदायक और महत्वपूर्ण है, इसे पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, यह साधना सरल है, और शीघ्र सफलतादायक है।

कुछ वर्षों पहिले मैं जब हिमालय में घूम रहा था, तो मुझे उत्तराखण्ड के पास एक श्रीयोग वावा मिले, उनकी चर्चा आस पास बहुत थी और वे विस्वार्थ भाव से लोगों का कल्याण करने में तत्पर थे, आस-पड़ार से पांच प्रकार के कार्यों में उनकी चर्चा विशेष रूप से थी।

१-छोटे गये बालकों या पुत्रों का पता लगाना—बालक जो जाते हैं, या उनका अपहरण कर लिया जाता है, इससे उनके माता पिता के मन में कितनी वेदना और दुःख होता है, इसको तो कोई भुक्त-भोगी हाँ समझ

सकता है, श्रीयोग वावा अपने कमरे में जाते और पांच मिनिट बाद आकर हाँ बता देते कि गुमा हुआ बालक पुरुष या स्त्री इस समय कहाँ पर किस के साथ है और किस स्थिति में है।

२-किसी भी प्रकार की रोग समाप्ति के लिए—इस कार्य के लिए भी श्रीयोग वावा की चर्चा दूर-दूर तक फैली हुई थी, कोई भी पुरुष या स्त्री उनके आश्रम में जाता, वह चाहे बुखार से पीड़ित हो या अन्य रोग में। वावा अपने सामने पानी का गिलास मंगवाते और अपने हाथ पर बन्धा हुआ तन्त्र उस पानी की गिलास में डालकर कुछ हिलाते और इसके बाद वह पानी रोगी को पीने के लिए दे दिया जाता, अधिकतर तो पहली बार में ही आगन्तुक पुरुष या स्त्री का रोग समाप्त हो जाता अन्यथा कोई गम्भीर बीमारी होती तो बार पांच बार ऐसा प्रयोग करने पर वह काफी राहत अनुभव करता और वावा के प्रति उसके मन में असौम्य बड़ा प्य हो जाती।

३-चोरी का पता लगाना—कई बार घर के सवस्य या नौकर-चाकर चोरी कर लेते हैं, या बाहर के कोई व्यक्ति रात को चोरी करके चले जाते हैं, फिर उस चोरी का पता नहीं चलता, इससे उस आबमी या घन तो बरबाद होता ही है, समाज में भी अपमानित होता पड़ता है, इसके अलावा उसे मानसिक संताप और

पेशानियाँ इतनी घबि
कमजोर, दुःखी घबि
स्थिति में भी वावा क
पांच मिनिट के बाद ह
बस्तु इस समय कहाँ

४-बलीकरण
जाता है या अपने
समझाने पर भी नहीं
मतनेव हो जाते हैं, प्र
किसी भी स्थिति में
यक होता है, वाक्पय
आती, तब वावाजी
बलीकरण करना है
उस पुत्री का उसकी
जितसे कि वह अपनी
पुत्र का पिता से बर्ण
पुत्र अपने पिता की क
जाता तथा उसका क
प्रकार अन्य कार्यों में
कुटिया में जा कर प
घाते और कहते कि
निश्चित होकर घर

५-जन्म मर्दन
स्वजन है, तो अक्रान्त
जन्म किसे न किसी
जन्मों में सगा भाई
अन्य कोई व्यक्ति हो
हो सकता है, पुरुष
व्यक्ति हो सकते
इस प्रयोग से भो
है तो इस प्रयोग को
है, और शत्रुता भूत

ये पाँचों प्रयोग

वस्तुतः इतनी शक्ति होती है कि यह जल्द से ज्यादा कमजोर, दुबला और एक तरह से मृत्यु हो जाता है, ऐसी स्थिति में भी बाबा अपनी कुटिया में जाते और चार पाच मिनट के बाद ही आकर बता देते कि चोरी गई वस्तु इस समय कहाँ पर है।

४- वशीकरण प्रयोग—यदि बार पुत्र कुटुम्ब हो जाता है या अपनी पुत्री के कदम बहक जाते हैं, और सम्झने पर भी नहीं समझते, अथवा पति पत्नि में मतभेद हो जाते हैं, प्रेमी या प्रेमिका रुठ जाती हैं, ऐसी किसी भी स्थिति में वशीकरण प्रयोग पूर्ण रूप से सहायक होता है, बाबाजी के सामने भी ऐसी कई स्थितियाँ आती, जब बाबाजी यह पूछ लेते कि किस का किससे वशीकरण करना है, यदि पुत्रों के कदम बहक गये हैं तो उस पुत्री का उसकी माँ से वशीकरण कर दिया जाता जिससे कि वह अपनी माँ के कहने में चलने लगती, या पुत्र का पिता से वशीकरण कर दिया जाता जिससे वह पुत्र अपने पिता की आज्ञा मानने के लिए तत्पर हो जाता तथा उसका गलत रास्ता सही हो जाता, इसी प्रकार अन्य कसों में भी इसका प्रयोग बाबाजी अपनी कुटिया में आ कर पाच-छह घण्टा मिनट के लिए बाहर जाते और कहते कि मैंने प्रयोग कर दिया है, अब आप निश्चित होकर घर जाय आपका काम ही जायेगा।

५- शत्रु मर्दन प्रयोग—समाज में यदि मित्र या स्वजन हैं, तो शत्रुकारण शत्रु भी बहुत होते हैं, और ये शत्रु किसी न किसी प्रकार से परेशान करते रहते हैं, इस शत्रुओं में सगा भाई हो सकता है, पड़ोसी हो सकता है, अन्य कोई व्यक्ति हो सकता है, व्यापारिक प्रतिस्पर्धी हो सकता है, पुरुष या अन्य राज्य पक्ष से संबंधित व्यक्ति हो सकते हैं, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रयोग से कोई भी व्यक्ति शत्रु भाव रखता है तो इस प्रयोग को करने से उसकी मनोवृत्ति बदल जाती है, और शत्रुता भूल कर उसका सहायक बन जाता है।

ये पाँचों प्रयोग आज के युग के अत्यन्त ही महत्वपूर्ण

और आवश्यक प्रयोग हैं, या यों कहा जाय कि इनकी आवश्यकता आज के समाज में बहुत अधिक बढ़ गयी है प्रत्येक व्यक्ति को पग पग पर इन समस्याओं से जूझना पड़ता है, और यदि कोई साधक या व्यक्ति इस प्रकार की कोई शक्ति या साधना सीख ले तो वह हजारों लोगों का बलदायक कर सकता है।

मैं श्रीचंद्र बाबा के सम्पर्क में लगभग छः साल रहा, और मैंने तन्त्र-यन्त्र से उनकी सेवा की, मैं उस साधना की सम्पन्न बहूँ जिस साधना के चल पर श्रीचंद्र बाबा उपरोक्त पाँचों प्रयोग सम्पन्न करते हैं और हजारों लाखों लोगों का बलदायक करते हैं, इससे उन्हें अद्वितीय सफलता प्राप्त और सम्मान तो मिलता ही है, धन और सुख भी जल्द से ज्यादा प्राप्त होता है।

कुछ वर्षों बाद मुझे बाबाजी से ही बात हुआ कि बहुत भैरव साधना से ये पाँचों सिद्धियाँ स्वतः प्राप्ता हो जाती हैं, बाद में मेरी सेवा से अनुशासित हो कर उन्होंने रूप्य कर बहुत भैरव साधना मुझे सिखा दी, और उसकी पूर्ण प्रामाणिक विधि भी स्पष्ट कर दी जिसे मैंने आगे चल कर सिद्ध किया तथा सफलता प्राप्त की।

इसके निम्न और साधना विधि इस प्रकार हैं—

१- इसके लिए सिद्ध बहुत भैरव यन्त्र को प्रायः प्रयुक्त होती है जो तालीज के आकार का होता है तथा जो बहुत भैरव चेतना से पुष्ट एवं प्राण किया से सम्पन्न होता है।

२- निम्न मंत्र जप किया करें, और चौदह दिन करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है जिस से वह उपरोक्त पाँचों स्थितियों में दूसरों का बलदायक करने में समर्थ हो।

३- वह दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, लाल धातन बिछा दे, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करें, स्वयं लाल धोती या स्त्री हो तो लाल साड़ी पहिन ले सामने बहुत भैरव यन्त्र को रख दे और मंत्र

की माला से मंत्र जप करें, इसके फलाना अन्य किसी विधि विज्ञान की आवश्यकता नहीं है।

प्रयोग :-

जब चौदह दिन का प्रयोग सिद्ध हो जाता है, तो यह तावीज अपनी बांह पर बांध लेना चाहिए और फिर उपरोक्त पात्रों समक्षों में से कोई समझा आती है तो अपनी मुट्ठी में यह यंत्र ले कर ज़ाँखें बन्द कर केवल पाँच बार मंत्र उच्चारण करने से उसे दिखाई देने लग जाता है कि खोया हुआ बालक कहाँ है, या चोरी किसने की है, और अतः कहां पर है अथवा यंत्र मुट्ठी में ले कर कहाँ जाय कि समुक्त लड़की का माँ से मिलकर रहे।

सर्वसिद्धि बटुक भैरव यंत्र

१- सर्वजनहितार्थ इस सर्व सिद्धि युक्त बटुक भैरव यन्त्र के लिए कोई धनराशि नहीं ली जायेगी।

२- प्रयोग की सिद्धि-प्रसिद्धि या प्रयोग से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी मंत्र-तन्त्र-यंत्र पत्रिका या इससे सम्बन्धित व्यक्तियों की नहीं होगी।

३- नीचे दिये गये प्रपत्र की अथवा अलग कागज पर आप अपने दो मित्रों के पूरे पते साफ-साफ लिख दें या तो इनसे आप सत्तर-सत्तर रुपये ले लें या आप अपनी तरफ से व्यय करके उन्हें सदस्य बना दें।

४- यह प्रपत्र पाह कर अथवा किसी कागज पर दो मित्रों के पते लिख दें, वह लिफाफे में रख कर हमें भिजवा दें, तब हम आपको (१५०) की बी०पी० से यह यह सर्व सिद्धि युक्त बटुक भैरव यन्त्र मुफ्त में भेज देंगे पोस्टमैन् को (१५०) रु० देकर आप वह बी०पी० प्राप्त कर लें और प्रयोग सम्पन्न करें, बी०पी० छुटने पर आप द्वारा भिजे गये दोनों व्यक्तियों को पत्रिका का

आप और फिर पाँच बार मंत्र उच्चारण करें तो बर्ती-करवा हो जाता है, यह इसी प्रकार किया जाता है, रोष मुक्ति हेतु पानी की गिराव में उपरोक्त मंत्र घुमा कर पानी बिना देने से रोष मुक्ति में सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ ।

वास्तव में ही यह मन्त्र दिखने में अत्यन्त मरुत प्रतीत होता है, परन्तु इसका प्रभाव तुरन्त और निश्चित होता है, ऐसा मेरा अनुभव रहा है, आप स्वयं अनुभव कर लाभ उठा सकते हैं।

वार्षिक सदस्य बनाकर उन्हें पूरे वर्ष भर प्रति माह निवर्तित रूप में पत्रिका भेजी जाती रहेगी।

५- इस प्रकार आप भवया मुफ्त में यह सर्व सिद्धि युक्त भैरव यन्त्र प्राप्त कर सकेंगे।

सर्वसिद्धि युक्त बटुक भैरव यन्त्र

१- मेरे मित्र का नाम

२- मेरे मित्र का नाम

३- सर्व सिद्धि युक्त बटुक भैरव यन्त्र मुझे इस पते पर भेजें।

मेरा नाम

मेरा पता

प्रतिक्रिया

तारा साधना आपके लक्षणों का आज मैं बहुत कम सेने यह साधना अर्ध का है, पूरा ज्ञान होता है, परन्तु यह ज्ञान और प्राप्ति आपका प्रत्येक अर्थ

पर आकर मैं कल रात्रि को ही दर्शन प्राप्त हुए, ऐसा है, और इस

आपके तारा मैं इस निर्णय पर वाणी प्रत्येक साधन सेने सम्पन्न की है, जो लौटरी प्राप्त हुए पर मेरे लिए तो तारा साधना सम्पन्न ही मुझे अखबार के इससे बड़ा प्रमाण।

मैंने आपके यह

साधना शिविर : सिद्धियां

प्रतिक्रिया

तारा साधना में मैंने पहली बार जोधपुर आकर आपके तपस्वर्या भवन में बैठ कर साधना सम्पन्न की और आज मैं महसूस करता हूँ, कि यह मेरा सौभाग्य था, कि मैंने यह साधना आपके यहाँ आकर पूरी की, मैं पचास वर्ष का हूँ, पूरा जीवन छोटी मोटी साधनाओं में ही बीता है, परन्तु पहली बार तारा से सम्बन्धित सुधनय ज्ञान और प्रामाणिक जानकारी इस शिविर में प्राप्त हुई, आपका प्रत्येक प्रवचन तो उज्ज्वल रहल है।

घर आकर मैंने इस साधना को सम्पन्न किया, और कल राति को ही पुनः भगवती महाविद्या तारा के दिव्य दर्शन प्राप्त हुए, ऐसा सौभाग्य जीवन में पहली बार हुआ है, और इसका श्रेय आपको ही जाता है।

—रमाशंकर पाठक, कानपुर।

आपके तारा साधना शिविर में भाग लेने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि आपके यहाँ सम्पन्न होने वाली प्रत्येक साधना शिविर को छोड़ नहीं, तारा साधना मैंने सम्पन्न की है, और मुझे पहली बार पचास हजार की लौटरी प्राप्त हुई है, भले ही यह पाँचवाँ पुरस्कार है, पर मेरे लिए ती दरिद्रता मिटाने का श्रेष्ठतम साधन है, तारा साधना सम्पन्न दो दिन पहले पूर्ण की है, और आज ही मुने अखबार के माध्यम से यह समाचार मिला है, इससे बड़ा प्रमाण और और सौभाग्य क्या हो सकता है?

—अनसूया भार्गव, यम्बई

मैंने आपके यहाँ सम्पन्न नवरात्रि में तारा साधना

शिविर में भाग लिया था, और पहली बार लगा कि जीवन का आनन्द क्या होता है, पहली बार अनुभव हुआ कि ऋषियुग्य जीवन कैसे व्यतीत होता है, पहली बार पवित्रता और दिव्यता का अनुभव हुआ। और यह पहली बार ज्ञात हुआ कि गुरु और शिष्य किस प्रकार आपस में सामने बैठ कर ज्ञान चर्चा करते हैं, आपके प्रवचनों के माध्यम से जो कुछ प्राप्त हुआ है, मेरे जीवन की दृष्टि है।

पिछले आठ वर्षों से मेरे दो लाख रुपये एक व्यापारी में फँस गये थे, और वापिस प्राप्त होने के आसार ही नहीं थे, पर यह माँ भगवती की कितनी बड़ी कृपा है, कि जिस व्यापारी से मैं अपना वापिस प्राप्त होने की उम्मीद ही छोड़ बैठा था, वह आप से ज्यादा कष्टा सहनकर्ता मेरे घर आकर दे गया है, और मेरा धन-राशि श्री अंगले महीने देने का वायदा किया है, यह सब माँ भगवती की कृपा और साधना का फल ही तो है।

—रामलाल कानूंगा, दिल्ली

मैंने आपके यहाँ पिछले दिनों सम्पन्न हुई कुण्डलिनी साधना शिविर में भाग लिया था, और यह पूरा शिविर अपने आप में अद्वितीय ही कहा जा सकता है, यकों का जागरण तथा कुण्डलिनी जागरण से सम्बन्धित जो आप ने ज्ञान और अनुभूतियाँ दी हैं, वैसी अनुभूतियाँ तो इस भारतवर्ष में तो अन्य कोई योगी या गुरु दे नहीं सकता, ऐसा लगता है, कि पूज्य गुरुदेव के कण्ठ में तो साक्षात्

सरस्वती विद्यमान है, जब वे बोझते हैं तो ऐसा लगता है जैसे समुद्र का करना वह रहा हो।

मैंने घर आकर चक्रों के जागरण की प्रक्रिया प्रारम्भ की, और पिछले एक सप्ताह से मुझे विविध अनुभव हो रहे हैं, मैं ज्योंही ध्यान भग्न होता हूँ, हिमालय के दृश्य और कृतियों का पावन चरित्र दिखाई देने लगता है, कल रात्रि को मुझे भगवत इष्ट भगवती दुर्गा के साक्षात् दर्शन हुए, ऐसा मलौकिक दृश्य कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से ही सम्भव हुआ है, कि मैं दुर्गा ने मुझे रात्री की दर्शन देकर कृतार्थ कर दिया है, वास्तव में यह मेरे जीवन का सद्द्वितीय शिविर था।

—ज्ञानदेव शर्मा, जयपुर

तन्त्र साधना शिविर में पूज्य गुरुदेव ने इतना अधिक ज्ञान और इतनी अधिक साधना पद्धतियाँ बता दी थी, कि सात-आठ शिविरों में जो ज्ञान दिया जाता है, वह इस एक शिविर में ही उम्होंने हमें प्रदान कर दिया था, वास्तव में ही यह मेरे जीवन का सौभाग्य था, कि मैंने इस महत्त्वपूर्ण शिविर में भाग लिया।

उन्होंने हमें सम्मोहन साधना विधि समझाई थी, और घर पर आकर मुझे एक घर ऐसा प्रयोग करना पड़ा, और आश्चर्य है, कि जिसे प्राप्त करने के लिए मैं तीन साल से प्रयत्न कर रहा था, वह स्वतः मूर्ति प्राप्त हो गई और वापिस अपने शाय मन्दिर सम्बन्ध बन गये।

अब इससे ज्यादा और क्या प्रमाण चाहिए, कि जो कार्य हजारों रुपये खर्च करके भी मैं नहीं कर सका वह कार्य एक छोटे से प्रयोग से सम्पन्न हो गया, इससे बड़ा सौभाग्य और तन्त्रों की प्रामाणिकता क्या हो सकती है।

—वैद्यनाथ शर्मा, पुता

मेरी इच्छा कई वर्षों से कुछ पिशाचिनी साधना सम्पन्न करने की थी, और मैंने इसके लिए प्रयत्न भी बहुत किया, इस बार मैंने तन्त्र साधना शिविर में भाग लिया, और पहली बार कर्ण पिशाचिनी साधना से

सम्बन्धित गुप्त कियाएँ और गुप्त रहस्यों का जानकारी प्राप्त की।

मैंने घर आकर पूज्य गुरुदेव द्वारा बताई हुई विधि से ही कर्णपिशाचिनी साधना सम्पन्न की और पहली ही बार में यह साधना शिष्ट हो गई, इन पंक्तियों के माध्यम से मैं प्रत्येक को चेलेज देता हूँ, कि यह कभी भी किसी भी क्षण आकर मेरी साधना की परीक्षा ले सकते हैं, मैं एक क्षण में ही उसको देखकर इसका पूरा भुक्तकाल स्पष्ट करने में समर्थ हूँ।

—मुरली मनोहर द्विवेदी, वाराणसी

तन्त्र साधना शिविर में भाग लेने के बाद आज घर आकर मैं अनुभव करता हूँ, कि मेरे जैसा सौभाग्यशाली साधक ही कोई व्यक्ति होगा, तन्त्र से सम्बन्धित जितना ज्ञान और कियाएँ मैंने सीखी है, वह तो गागर में सागर की तरह है, इच्छा तो यह होती है, कि मैं सब काम साज छोड़ कर जितने भी शिविर लग रहे हैं, उन सभी शिविरों में भाग लूँ और जीवन का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करूँ।

मैंने अनुभव किया है कि साधना शिविरों में उपकरणों और सामग्रियों की जिस प्रकार से गुरुदेव प्राण-श्वेतना वस्तु बनाते हैं, और साधना भवन में ही जिस प्रकार से प्रयोग सम्पन्न कराते हैं, उससे उन सामग्रियों की महत्ता बहुत अधिक बढ़ जाती है, घर आकर उनके बताये हुए तरीके से ही एक यत्नीकरण प्रयोग सम्पन्न किया और पहली ही बार में मुझे सफलता मिल गयी, मैंने एक ऐसा कार्य किया है, जिसकी कोई मिसाल ही नहीं है।

वास्तव में ही यह शिविर मेरे लिए तो पूर्ण सौभाग्य शाली रहा है, वास्तव में ही ये प्रभाग ही होते हैं, जो घर पर पढ़े रहते हैं, और शिविरों में भाग ले नहीं पाते।

—रामराज देवड़ा, बम्बई

★ ★ ★

शिविर साधना

पिछले महिने सम्पन्न निवे है, का जो उत्साह, लग में ही आश्चर्यजनक ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति में अपनी वास्तव में ही पूरे शिविरों का लाभ साधकों ने इस शिविर में ही वास्तव में ही साधारण है।

मई में हमने एक विशेष शिविर साधना शिविर की थी, कि ये किसी और सफलता प्राप्त शिविर है।

साधारण साधना है। इस प्रकार तन्त्र साधक आज तक साधकों के लिए भी है, इसका लाभ ले कर पूरा कर सकते

सभी प्रयोग

* समाचार एवं सूचनाएं *

शिविर साधना

पिछले महिने हमने तीन-चार साधना शिविर सम्पन्न किये हैं, और इन साधना शिविरों में साधकों का जो उत्साह, लगन, और तीव्रता देखी है, वह वास्तव में ही साधकवर्गजनक है, साधकों में साधना सीखने की, ज्ञान प्राप्त करने की, एक जलक है, और वे प्रत्येक स्थिति में अपनी इन इच्छाओं की पूर्ति कर रहे हैं, वास्तव में ही पूरे भारतवर्ष में फैले हुए, साधक तो इन शिविरों का लाभ उठा ही रहे हैं, विदेश के भी एक-दो साधकों ने इस शिविर में भाग ले कर धनदास किया है कि वास्तव में ही ये शिविर जीवन की पूर्णता के साधक हैं।

मई में हमने चार महत्वपूर्ण शिविर रखे हैं और ये प्रत्येक शिविर अपने-अपने लाजगाव है, बंगलामुखी साधना शिविर की तो साधकों की कई वर्षों से प्रतीक्षा थी, कि वे किसी महर्षिवा साधना शिविर में भाग ले और सकलता प्राप्त करें, उसके लिए यह सौभाग्यदायक शिविर है।

साबर साधना सिद्धि शिविर तो इस वर्ष की सौगात है। इस प्रकार तब साधना शिविर में भाग न लेने पर साधक आज तक पछता रहे हैं, उनके लिए और अन्य साधकों के लिए भी यह एक अद्वितीय साधना शिविर है, इसका लाभ ये इस महत्वपूर्ण शिविर में भाग ले कर पुरा कर सकते हैं।

जल्दी प्रत्येक सिद्धि साधना के बारे में तो कुछ

कहना ही व्यर्थ है, जो साधक इस शिविर में भाग नहीं लेंगे, बाद में हाथ मलने के मजाला उनके पास कुछ नहीं बचेगा, यह शिविर प्रत्येक एजिका पाठक और साधक के लिए सौभाग्यदायक है, हमारी राय में तो हर एक सक्षम को इस शिविर में भाग लेना ही चाहिए।

यदि मैं यह कहूँ कि सूर्य सिद्धांत साधना शिविर पूरे विश्व का सौभाग्यदायक शिविर कहा जा सकता है, और जिस प्रकार से साधकों के मन पर रहे हैं, उससे ऐसा लगता है कि उन्हें इस शिविर में भाग लेने का कौज है, यह शिविर भी अपने आप में सौभाग्यदायक और भाग्योदयकारक है जिससे हम महत्वपूर्ण ज्ञान और साधना चिन्तन को प्राप्त कर सकेंगे।

साधकों के अनुरोध पर ही, हमने ये शिविर रखे हैं और ये शिविर आप सभी साधकों को ही समर्पित हैं, मुझे विश्वास है कि आपमें से प्रत्येक सदस्य और साधक इन शिविरों का आनन्द ले सकेंगे और जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकेंगे।

समर्पण दिवस

११ मई को पूज्य गुरुदेव की जन्म दिन अत्यन्त ही धूप-धाम में मनाया गया, इसमें पूरे भारतवर्ष से सैकड़ों-सैकड़ों साधक और शिष्य एकत्र हुए, दिन भर इन शिष्यों के आने का तांता लगा ही रहा, पूरा दिन अपने-आप में विविध साधनाओं से संबंधित था, जिसमें इन सभी ने भाग ले कर पूर्णता प्राप्त की, सभी के चेहरे प्रसन्न थे, सभी के हृदय में मानस और जंमन,

उत्साह और प्रसन्नता थी; शाम की प्रीतिभोज हुआ और इस प्रकार अत्यन्त ही भव्य तरीके से यह दिवस सम्पन्न हुआ।

धनराशि अभी न भेजें

पृष्ठ दो पर अंकित महत्वपूर्ण प्रयोग है, और इसके लिए जो बहुत औरत यंत्र दिया गया है, यह अत्यन्त ही सिद्धिदायक तथा प्रभावशाली है, इसके लिए आप धनराशि न भेजें, केवल मात्र आप पत्रिका के दो सदस्यों के नाम लिख कर भेज दें या तो आप पृष्ठ ४ पर प्रकाशित प्रयोग को भर कर भेज दें, या अल्प कागज पर उतार कर भेज दें, इससे आपको की० पी० से सुरक्षित रूप से यह उपहार प्राप्त हो जायेगा जिसका कि आप उपरोक्त अपनी साधना में प्रयोग कर सकेंगे और आप जिन दो व्यक्तियों की पत्रिका सदस्य बनावेंगे, वे पूरे वर्ष भर आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

यह यन्त्र सीमित संख्या में ही मन्त्र सिद्ध किये हुए है, अतः जितना जल्दी हो सके आप इसे मंगा ले, यन्त्र समाप्त होने पर हम भेजने की क्षमता में नहीं रहेंगे।

परकाया प्रवेश

पृष्ठ २९ पर 'परकाया प्रवेश सिद्धि यन्त्र' के बारे में विवरण प्रकाशित हुआ है, यह सिद्धि यन्त्र अपने आप में दुर्लभ यन्त्र कहा जाता है और इस पर विशेष पद्धतियों से मन्त्र सिद्धि सम्पन्न करवा कर यन्त्र भेजने की व्यवस्था होती है, इस पर व्यय (६००) रु० आ जाता है।

पर धनराशि लेकर यह यन्त्र नहीं भेजा जायेगा, आप पत्रिका के पांच सदस्य बना कर उनके पूरे नाम पते

व ३५०) रु० का बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर भेज देंगे, तो यह यन्त्र सुरक्षित रूप से आपको भेजने की व्यवस्था हो सकेगी, मनीऑर्डर जब आप कर दें तो पांच व्यक्तियों के पूरे पते लिख कर मनीऑर्डर की रसीद साथ में संलग्न कर दे और यह लिख दें कि यह यन्त्र यन्त्र के लिए धनराशि भेजी जा रही है।

इस प्रकार के मात्र साठ-वस यन्त्र ही फिजहाल तैयार करवाये गये हैं, अतः यदि आप जल्दी ही यह यंत्र मंगाते हैं तो आपको भेजने में हमें सुविधा होगी।

अतीन्द्रिय यन्त्र

पृष्ठ ३५ पर अतीन्द्रिय यन्त्र का उल्लेख आया है, इस पर त्रयोदश (१५०) रु० है, और धनराशि भेज कर आप इस यन्त्र को चाहें तो प्राप्त कर सकते हैं।

सुरेन्द्र तगर के चन्दुलाल साहू, अहमदाबाद के भाई जीवन सिंह राजपूत, बीरगढ़ के कप्तान भाई सीता, अहमदाबाद के श्री जानी भाई, जावाब के सुरेन्द्र कुमार बनर्जी, नेपाल के सनद कुमार अधिकारी आदि जिस मनोयोग से पत्रिका प्रसार के लिए कार्य कर रहे हैं, वह अपने आप में सराहनीय है, बड़ीया के प्रवीण जोशी, हरी राम चौधरी, आदि का सहयोग भी हमें निरन्तर मिलता रहा है, पत्रिका परिवार की तरफ से हम इन सभी गुरु भाइयों को धन्यवाद देते हैं कि जो निष्ठापूर्वक सतत अपने कार्य में लगे हुए हैं और निरन्तर अपने-अपने क्षेत्र में कार्य सचेष्ट हैं, रोहतक के चन्दा सिंह पहल, श्री राममेवक यादव खोड़गा के रघु, आदि का सेवा कार्य भी अपने आप में सराहनीय है, पिछले सारे समारोहों में इन लोगों ने जितने मनोयोग से कार्य किया है, वह सराहनीय है।



कुपटलितो य
नमः भवः यथा प्रका
है, पदचक्र भेदन।
महाशक्ति माधवा
ज यन्त्र से कुपटलि
किया है, वह योगि
बाना है।

कुपटलितो के
समय लेता था वस

मूल यन्त्र

पिचलियों को
के दोनों तरफ से टेढ़े
कर स्थिर कर दें,
व्यापे इससे दायाँ प
जायेगा इसी की मू

५- जालंधर

अपने गले के
पर दुहता से टूटने
है, और इससे कण्ठ
स्थर यन्त्र है।

३- उहुयान

पेट की पिचका

कुण्डलिनी यों जगती है

कुण्डलिनी अध्यात्म साधना का प्रमुख अंग रहा है, लगभग सभी प्रकार की योग साधनाओं की यह मूलाधार है, पटचक्र भेदन कर सहकार का प्रभुत्व प्राप्त करने में यही शक्ति माध्यम रही है, जो व्यक्ति प्रयत्न कर अपने जीवन में कुण्डलिनी को जाग्रत कर सहस्रार प्राप्त कर लेता है, यह पाणिनी में सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण विद्वत् श्रुति बताया है।

कुण्डलिनी के लिए दो चीज महत्वपूर्ण शब्द हैं, जिनको समझ लेना आवश्यक है—

मूल बन्ध (बन्धन)

विद्वत्तियों को जाँचों से सटा कर पालथी मारे, पैरों के दोनों तलम टेले कर वरहें साधार चक्र के नीचे जमा कर स्थिर कर दें, बायें पैर के नीचे रखते हुए, सीधे दबाये इससे दायाँ पैर पर बायाँ पैर डीक प्रकार से बैठ जावेगा इसी को मूल बन्ध या बन्धन कहते हैं।

५- जालन्धर बन्ध

घपने गले के नीचे के गड्ढे में दूधली छटका दें यहाँ पर दूधला से लुहो को खदाने से छाती को दबाये रखती है, और इससे कण्ठ मणि दिखाई नहीं देती, यही जालन्धर बन्ध है।

३- उडुपान बन्ध

पेट को पिचका कर पीठ से लगाये तब शिश्न स्थान

के किनारे और नाभि के नीचे वह पृथ्वी तथा जल पाँच की एक दूसरे से मिलाती है, इसी समय बन्धन की ऊपरीता से कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती है।

जब कुण्डलिनी शक्ति जागती है तब घरे वेग के साथ कटक के कर ऊपर की ओर मुह फैलती है, उसको देखकर ऐसा लगता है, कि जैसे वह बहुत दिनों की भुखी हो और सबसे सारा शरीर चैतन्य हो जाता है।

कुण्डलिनी साधना

- १- प्रति दिन चार बजे उठकर सासन पर बैठ जाय।
- २- शक्ति, प्राणायाम दोनों प्रकार के—पाँच से तीस प्राणायाम।
- ३- शक्ति जालनी मुद्रा दोनों प्रकार की—प्रत्येक पाँच से दस तक
- ४- ताड़न मुद्रा चारों प्राणायाम में एक एक
- ५- परिहान मुक्ति जालन चारों प्राणायाम में एक से आठ तक।
- ६- बाकी समय में पटचक्र भेदन की मानसिक क्रियाएं

सायंकालीन कार्यक्रम

सायंकाल भोजन से पूर्व कुछ क्रियाओं का सम्पादन करें।

- १- महाभुज्रा—प्रत्येक पैर पर पाँच से पन्चीस तक
- २- महाबन्ध—प्रत्येक पैर पर पाँच से पन्चीस तक
- ३- महाविध—दोनों प्रकार के—पाँच से दस तक

४- विपरीत करणी मुद्रा यथि से दस तक

५- पटञ्जल भेदन की क्रियाएं (राज योग)

१ मूलाधार-प्रथम चक्र

माता शरीर में स्थित सर्कों में नीचे से ऊपर की ओर यह प्रथम चक्र है, जिस सब सर्कों का मूल आधार होने के कारण ही इस चक्र को मूलधार कहते हैं, इसके ऊपर ही अन्य सभी चक्र स्थित हैं ।

यह मूलाधार शुद्ध और लिंग के बीच में सुषुम्ना नाड़ी में वेदित्त शरीरोमुख है यह राक्तवर्ण युक्त सुन्दर रंग का कमलवदल है, इसके पदम में चार कोण है, इसका देखता पृथ्वी है, इसका बीज 'ॐ' है, इसके मुख्य चार वर्ण है जिनके नाम हैं "व, क, घ, स"।

इस पृथ्वी और के ऊपर चतुर्थ भुज शक्त विराजमान है, अकिनि जति को जाग्रत करने से भूलाधार जाग्रत होता है, इसके जाग्रत होने से भूलाधार चक्र के भीतर करीब सूर्यो के समान प्रकाश फैल जाता है, और ऐसा साधक वागीश्वर भ्रम जाता है, वह योग रहित हो कर उसमें काव्य रचना उत्पन्न हो जाती है, और ऐसा कवि शक्त, विष्णु और महेश दोनों देवों की सेवा एवं साहचर्य प्राप्त करने में सक्षम होता है ।

२ स्वाधिष्ठान-द्वितीय

स्वयं यतिः स्थितः । जितः स्थानः परं मूलं इन्द्रो
स्थितः है । उसके ऊपर में स्वाधिष्ठान भक्त स्थित है ।
यह सुवृक्षा नाडी के मध्य में पद्मल कमल है, वहाँ में
यथाक्रम 'वं भं मं यं रं ल'— ये छः बीज प्रसर
है, इस पर नीचे जलद प्राप्ति युक्त कौस्तुभ मणि में
सुशोभित चतुर्भुज श्री विष्णु भगवान् सुशोभित है ।

यह 'राकिरी' शक्तियुक्त पूरी तरह स्वाधिष्ठान तक
आगत होने से मन स्थिर होता है, काम क्रोध आदि
सब नष्ट होते हैं। वायामोह आदि ग्रन्थकार दूर हो कर

हृदय में ज्ञान रूपी सूर्य का उदय होता है, तथा साधक अपने ही आनन्द में लीन रहता है।

३ मणिपुर-तृतीय चक्र

स्वाधिशालन के ऊपर नाभी मूल में धने बावल के
सामने त्याम चर्ण का दल कमल है, उसके दलों में
पालप्रमा बलि—“अं, इं, णं, तं, वं, दं, ये, मे, पे, कं,”
इस श्रीआक्षर है, इस दल कमल का आकार त्रिकोणाकार
पद्मिगण्डल स्वरूप है, इस पर रक्त लीले शतुर्भुज अग्नि
देव स्थापित है, और अग्नि के मध्य में भगवन्त हस्त
स्वयं साक्षात् विराजमान है ।

इसकी शक्ति वाकितो शक्ति है, इसके वापस होने से व्यक्ति में पानत और संहार करने की शक्ति प्राप्त होती है, उसके मुंह में हमेशा सरस्वती का निवास रहता है और काव्य के माध्यम से वह पूरे विश्व में विख्यात होती है ।

४ अनाहत—चतुर्थ चक्र

जिस चक्र में जल्यं ब्रह्म मयं ध्वनिं विना चोदं {रिमे
अपने आप खुलाई देता है, उसे अनाहत चक्र कहते हैं।

मणिपुर के ऊपर हूरा के गांव बाहुक पुष्प के समान भाव रंग का 'क' से 'उ' तक के बारह रत्न वर्ण अक्षरों ने युक्त वह अनाहत कमल है, वह वायुमण्डल है, इस पर दावू बीज के साधन में तीनों लोकों के बह्यरा करने वाले भगवान शिव की उपस्थिति समझनी चाहिए, वह लाकड़ी शक्ति से संचालित है, इसके जागृत होने से कल्पवृक्ष के समान मन की सारी इच्छाएं पूरी होती हैं, ऐसा साधक देवगुरु बृहस्पति के समान सब शक्तियों का जानने वाला, वाक पद, प्रत्येक पदार्थ की नृष्टि, स्थिति और संहार करने में समर्थ परब्रह्मा प्रदेश करने की योग्यता धरणा करने वाला योगी बन जाता है।

५. विस्तृत-पंचम

इन्द्रादित्य पद्म से
बनी जाने विष्णु नाम
के दोहस स्वर रत्न
नाम विष्णु चक्र इसलिये
वाक्या नूतना को प्राण

इसकी जाँच। मि
जबकि अन्तर्धान सिंग तब
कान्ते वर साधक भिका
काका, रोग और जोर

६. आज्ञा - षट्

आनु श्रीर 'पठ' से
के समाप्त अवतारों का
हल है, जिनमें 'ह' श्री
पर गुरुदेव स्वयं गुरु
इसको सिद्ध करते
वाला संकेत, सर्वदर्शी
दीर्घाद तथा मित्र योग

कृष्णलिली क्रम

पुस्तकचरण

एष्ट देवता-स्थल
कुल-कुलविभी मन्त्र

यहां पर इष्ट देव
उच्चारण करना चा

विनियोग

ॐ श्रुत्य सर्व
ममवान श्री महाका

५ विजुद्ध-पंचम चक्र

अनाहत पदम के ऊपर कण्ठ देश में पुत्र वर्ण पीडित कर्मा जाने विजुद्ध नाम कमल के दलों पर 'अ' से लेकर 'इ' के पीडित स्वर रक्तवर्ण मय दिखाई देते हैं, इसका काम विजुद्ध चक्र इसलिए पड़ा कि यहाँ यहाँ पर जीव का जड़ता की प्राप्ति करती है।

इसकी गाँ रिक्ति है, इस दल पर अर्द्ध नारी-स्वर भगवान् शिव स्वयं विराजमान हैं, इसके सिद्ध करने पर साधक शिवालदर्शी, लोगों का कल्याण करने जाता, रोग और शोक से रहित चिरजीवी बनता है।

६ आज्ञा - षष्ठ चक्र

ताजु और 'अ' से दोनों ओरों के बीच में चन्द्रमा के समान स्वतन्त्रता का आज्ञा नामक चक्र है, इसके दो दल हैं, जिनमें 'ह' और 'ध' के दो वर्ण हैं, इस चक्र पर गुरुदेव स्वयं गुड ग्रह ज्ञान युक्त स्थापित होते हैं,

इसकी सिद्ध करने वाला साधक परकाय प्रवेश करने वाला सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, परोपकारी परमसिद्धि सम्पन्न दीर्घायु तथा सिद्ध योगी होता है।

कुण्डलिनी क्रम

पुरुषचरण

इष्ट देवता-स्वरूपा-कुल-कुण्डलिनी-श्रीव्यर्थे अमुकशर कुल-कुण्डलिनी मन्त्रस्व पुरुषचरणमहं करिष्ये।

यहाँ पर इष्ट देवता शब्द के स्थान पर अपने इष्ट का उच्चारण करना चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य सर्वे-सिद्धि-श्रीकुण्डलिनी-महा-मन्त्रस्व भगवान् श्री महाकाली शक्तिः, विश्व महाशक्ति-श्री

कुण्डलिनी देवता, विष्णु छन्दः, माया (ह्रीं) बीज, सिद्धिः शक्तिः, प्रणव (ॐ) कीलक, चतुर्वर्ग-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

श्रीमहाकाल-ऋषये नमः शिरसि।

विश्व-व्यापिनी-महा-शक्ति-श्रीकुण्डलिनी-देवताये

नमः हृदि

विष्णु-छन्दसे नमः मुखे।

माया-बीजाय नमः लिंगे

सिद्धि-शक्तये नमः नाभौ

प्रणव-कीलकाय नमः पादयोः।

चतुर्वर्ग-प्राप्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वाने

पङ्क्त-न्यास

ह्रीं

ह्रीं

ह्रूं

ह्रूं

ह्रीं

ह्रूं

कर-न्यास

अंगुष्ठाभ्यां नमः

तर्जनीभ्यां स्वाहा

मध्यमाभ्यां वषट्

अनामिकाभ्यां ह्रूं

कनिष्ठिकाभ्यां वीषट्

करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्

अंग-न्यास

हृदयाय नमः

शिरसे स्वाहा

शिखायै वषट्

कवचाय ह्रूं

नेत्र-त्रयाय वीषट्

ग्रन्थाय फट्

ध्यान

सिन्दुरारुण-विग्रहां, त्रि-नयनां माणिक्य-मौलि-
स्फुरत्

तारा - नायक - शेखरां स्मित-मुखीमापीस-
वक्षोरुहाम् ।

पाणिभ्यां मणि - पूर्ण-रत्न - चपक रक्तोत्पलं
विभ्रवीम्

सौम्या रत्न - घटस्थ - सव्य - चरणां ध्यायेत्
परामर्शिकाम् ॥

कुण्डलिनी मंत्र

तीन अक्षरों वाला मूल मंत्र—ऐं ह्रीं श्रीं

छब्बीस अक्षरों वाला मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रीं हूं जगन्मातः सिद्धि देहि देहि स्वाहा

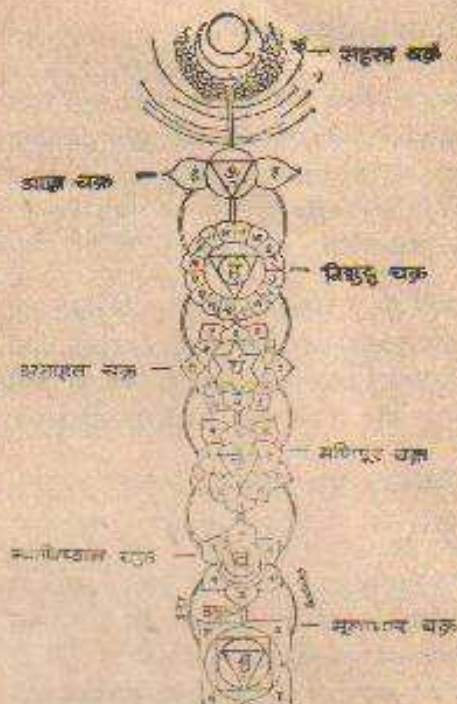
बावन अक्षरों वाला मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं हूं हूं ह्रीं हूं जगन्मातः सिद्धि
देहि देहि स्वयम्भू-लिंगमाश्रितायं विद्युत्कोटि-
प्रभाय महा-बुद्धि-प्रदायं सहस्र-दल गामिन्यं
स्वाहा

जप समाप्त के बाद कल की कुण्डलिनी देवी की
समर्पित करें—

गुह्यपाति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपं
त्वत्प्रसादान्मे देवि सिद्धिर्भवति महेश्वरि

इसके बाद कुण्डलिनी शक्ति की हाव जोड़ कर
प्रणाम करते हुए उसकी स्तुति करें ।



कुण्डलिनी जागरण

कुण्डलिनी स्तुति

ॐ नमस्ते देव-देवेशि । योगीश-धारा-वल्लभे
सिद्धिदे ! वरदे ! मातः ! स्वयम्भू-लिंग-वेष्टिते
ॐ प्रसुप्त-भुजगाकारे ! सर्वथा कारणा-प्रिये
काम-कलान्विते ! देवि ! ममानीष्टं कुरुष्व मे
ॐ असारं घोर-संसारं भव-रोगात् कुलेश्वरि
सर्वदा रक्ष मां देवि ! जन्म-संसार-सागरात्

वस्तुतः कुण्डलिनी साधना जीवन की त्रीभाषवाचक
साधना है, और इस साधना के पूर्णता के साथ सम्पन्न
करने पर साधक सिद्ध योगी बन कर सम्पूर्ण विश्व पर
अपना प्राधिपत्य स्थापित करने में सफल हो पाता है ।



कतिपय

बानी बनी है श्री
अनुष्ठान तन्त्र
सिद्धि होती है ।

महाबोधी
अनन्य उपासक
अनन्य उपस्थित
इस महापुरुष के
घोर मेरे विना
संबंधित कुछ
माध्यम से सर्व
समस्याओं से मु
सकता है ।

उनके अनुसा

❀ महादेव्यै नमोस्तुते ❀

‘मां’ के तो सभी दिन महत्वपूर्ण होते हैं, इस हेतु प्रत्येक दिन अपने आपमें अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ‘भगवती दुर्गा’ से संबंधित अनुष्ठान या मन्त्र अप सम्पन्न किया जाए तो निश्चय ही कार्य सिद्धि होती ही है।

प्रस्तुत लेख में उन गोपनीय विधियों का पहली बार स्पष्टीकरण किया जा रहा है जिसके माध्यम से साधक प्रयोग कर मनोवांछित सफलता प्राप्त कर सकता है।

क तियुग में गणेश और दुर्गा संध्या ही महत्वपूर्ण मानी गयी है और यदि सही प्रकार से इन से संबंधित अनुष्ठान सम्पन्न किये जाए तो निश्चय ही तुरन्त कार्य सिद्धि होती है।

महायोगी स्वामी चंडीदास जी भगवती दुर्गा के अनन्य उपासक हैं, और मां जगदम्बा उनके सामने अत्यंत उपस्थित हो कर भोजन ग्रहण करती हैं। मुझे इस महापुरुष से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और मेरे जिलासा करने पर उन्होंने भगवती दुर्गा से संबंधित कुछ गोपनीय रहस्य स्पष्ट किये थे जिसके माध्यम से वर्तमान में दुखी एवं संतप्त मानव अपनी समस्याओं से मुक्ति पाकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

उनके अनुसार ये नवरात्रि के प्रारम्भ से आकर

पूर्णिमा तक का पूरा समय ‘शिवसार्तक’ समय कहलाता है। जिसका एक छोर भगवती दुर्गा से संबंधित है तो दूसरा छोर शिव से। शिव और शक्ति को परस्पर अन्वोन्वाद्य संबंध है इसलिए चैत्र से लगा कर आकर पूर्णिमा के बीच कभी भी इन प्रयोगों को सम्पन्न किया जा सकता है।

इन प्रयोगों के लिए पांच साधनानियां अपेक्षित हैं—

- १— इनमें से किसी भी साधना में सवा लाख मन्त्र जप होना आवश्यक है।
- २— दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है पर फिर भी यदि वह मंत्र जप या अनुष्ठान ११ या २१ दिनों में सम्पन्न हो जाए तो ज्यादा उत्तम रहता है।
- ३— साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण पालन करे और रात्रि को ही मन्त्र जप सम्पन्न करे।
- ४— मन्त्र जप के समय प्रीति पहिने, श्री का दीपक

समाधि और संबंधित यंत्र सामने रख कर उसकी तरफ दृष्टि रखता हुआ, स्पष्टिक माला से मन्त्र जप सम्पन्न करें।

१- साधना काल में एक समय भोजन करें।

उपरोक्त सभी नियम सामान्य हैं, और सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी संबंधित साधना सम्पन्न कर आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त कर सकता है। इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, रजस्वला समय में पांच दिनों तक स्त्रियां साधना या मन्त्र जप सम्पन्न न करें, इसके बाद पुनः मन्त्र जप प्रारम्भ कर सकती हैं। इससे अनुष्ठान अवधि खंडित नहीं होती।

समस्त प्रकार की कार्य की सिद्धि के लिए

अपने सामने 'कार्य सिद्धि यन्त्र' तथा मिहवाहिनी दुर्गा चित्र (मंत्र सिद्ध) स्थापित कर एकटिक माला से निम्न मन्त्र का जप करें, और म्यारह अथवा इक्कीस दिनों में सवा लाख मन्त्र जप करने पर मनोवांछित कार्य में निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है। सवा लाख मन्त्र जप करने से बाद उस यन्त्र को अपनी भुजा पर बांध ले तो निश्चय ही मन में चाही हुई कार्य सिद्धि हो जाती है।

मन्त्र

ॐ जातवेद से मुनवाम सोममरातीयतो निदहाति

वेदः।

सतः वर्षेदति दुर्गाणि विश्वानाथेव सिन्धुदुरीता

त्यग्निः ॥

२ अकाल मृत्यु निवारण के लिए

अपने सामने 'अपमृत्युनिवारण यंत्र' स्थापन कर उसको बराबर देखते हुए, निम्न मन्त्र का सवा लाख जप करने पर अकाल मृत्यु या मृत्यु भय समाप्त हो जाता है और यदि मरणासन्न व्यक्ति के लिए भी यह

प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो वह पुनः स्वस्थ हो कर उठ खड़ा होता है।

मन्त्र

शुक्लेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके
घण्टास्त्रनेन नः पाहि चापज्यामि स्वनेन च ॥

मन्त्र जप करने करने के बाद संबंधित यन्त्र मरणासन्न रोगी की या व्यक्ति की पहिना दिया जाय तो निश्चय ही उसका मृत्यु भय समाप्त हो जाता है।

३- प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए

यदि साधना में बार बार असफलता प्राप्त हो रही हो और बाधाएं आ रही हो तो साधना से पूर्व भगवती दुर्गा से अनुमति मांग कर निम्न मन्त्र का सवा लाख जप 'साधना सिद्धि यन्त्र' के सामने सम्पन्न कर उस यंत्र को अपनी भुजा पर बांध ले और फिर साधना करे तो उसे निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती है और वह सिद्धि होने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है—

मन्त्र

जरलामतदीना तं परिचारा परायणे
सर्वस्यातिहरे देवि नारायणि नमो स्तु ते ॥

४- निर्विघ्नता से कार्य सिद्धि के लिये

शादी, विवाह, व्यापार या कोई भी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाय इसके लिए उस कार्य के प्रारम्भ से पूर्व यदि निम्न मंत्र के सवा लाख मन्त्र जप 'कार्य सिद्धि यन्त्र' के सामने सम्पन्न कर घर का मुखिया अपने गले में धारण कर कार्य प्रारम्भ करे तो उस कार्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती और वह कार्य पूर्णता के साथ सम्पन्न हो जाता है।

मन्त्र

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥

५- मनचाहा पति प्राप्ति के लिए

कई कारणों से यदि लक्ष्मी का विवाह नहीं हो रहा हो या सगाई, मादी में बाधाएं आ रही हों अथवा मनोवांछित पति प्राप्त नहीं हो रहा हो तो निम्न मंत्र का मन्त्र जप "कामदेव यंत्र" के सामने सम्पन्न कर उस यंत्र की कम्पा गले में धारण करें तो कुछ ही दिनों में उसे मन चाहा पति प्राप्त हो जाता है उसकी तरफ से मनोवृत्ति मिल जाती है और शीघ्र ही कार्य सिद्धि हो जाती है।

मन्त्र

एवं देव्या वरं लब्ध्या सुरथः क्षत्रियर्षभः
सूर्यज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥

६- समस्त प्रकार के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए

यदि शत्रु बड़ गये हों और प्राणों का खतरा हो अथवा व्यापार में बाधाएं पहुँचा रहे हों तो अपने सामने 'शत्रुस्तम्भन यंत्र' रख कर उस पर तजर रखते हुए निम्न मन्त्र का अनुष्ठान करें तो निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है और शत्रु समाप्त हो जाते हैं—

मन्त्र

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्द्विरिजिनाशनम् ॥

मन्त्र जप के बाद सर्वविध यंत्र मंगलवार के दिन शमशान में जाकर फेंक देना चाहिए या जंगल में जा कर जमीन में गड़ देना चाहिए तो निश्चय ही यह शत्रुदमन में सफलता तथा शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में

सफल हो पाता है।

समस्त प्रकार के रोग शान्ति के लिए

यदि घर में रोग हो या कोई न कोई रोगी बना रहता हो प्रथम किसी पारिवारिक व्यक्ति को ऐसा रोग हो गया हो कि वह समाप्त हो नहीं हो रहा हो तो "रोग मुक्ति यंत्र" सामने रख कर निम्न मंत्र का जप अनुष्ठान के रूप में किया जाय तो निश्चय ही वह रोग मुक्त हो जाता है।

मन्त्र

रोगानशेषानपहं सि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
स्वामाश्रिता ह्याश्वयतां प्रयन्ति ॥

अनुष्ठान समाप्त होने के बाद वह यंत्र या तो रोगी के गले में पहिना दे या घर में ही किसी स्थान पर टांग दे तो घर से रोग समाप्त हो जात है और व्यक्ति निरोग हो कर जीवन में पूर्ण सुख एवं आनन्द प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

ऊपर मैंने भगवती दुर्गा से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दिये हैं इनमें से प्रत्येक अनुष्ठान में तथा लाख जप करना चाहिए, किसी भी प्रकार की धोती पहिनी जा सकती है, सामने शुद्ध ची का दीपक व अगरबत्ती लगी रहनी चाहिए, आसन पीले रंग का सूती होना चाहिए, तथा एक समय भोजन में कुछ भी ग्रहण कर सकता है, इस प्रकार नियमपूर्वक अनुष्ठान करने से निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है।

यंत्र-मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त दुर्गा अर्चन सम्पू-
रित होने चाहिए और इस प्रकार के प्रत्येक यंत्र पर व्यय मात्र ३००)६० आस्ता है, अशिम धतराशि भेजकर संबंधित यंत्र प्राप्त कर अनुष्ठान सम्पन्न कर सकते हैं।

“निश्चित सिद्धिदायक प्रयोग”

पत्रिका के इस अंक में यह एक महत्वपूर्ण प्रयोग दिया जा रहा है, आपमें से प्रत्येक पत्रिका पाठक या साधक इसका प्रयोग करें। आप पायेंगे कि इसका प्रभाव तुरन्त एतद् अनुकूल होता है। पिछले तीस वर्षों से मैं और मेरे शिष्य इन प्रयोगों का लाभ उठाते आये हैं, और एक बार भी इनका प्रभाव व्यर्थ नहीं गया।

एक महत्वपूर्ण लेख पत्रिका पाठकों के लिए, जिन्हें करने से कोई हानि नहीं होती अपितु जन साधारण में लोकप्रियता प्राप्त होती है, और तत्क्षण उनके कष्टों का शमन होता है।

आप खुद ही इन प्रयोगों को आजमा कर देख लीजिये न।

व्यापार में वृद्धि के लिए

दुकान पर आकर गद्दी पर बैठने के बाद दैनिक कार्य क्रम प्रारम्भ करने से पूर्व निम्न मंत्र का एक सौ आठ बार उच्चारण कर दिया जाय तो उस दिन व्यापार में तो वृद्धि होती ही है, किसी भी प्रकार की हानि से भी सुरक्षा मिलती है।

मन्त्र

श्रीगुरुले महा-गुरुले कमल-दल-निवासे श्री महालक्ष्म्ये नमो नमः लक्ष्मी भाई सत्य की सवाई धावो भाई करो भलाई, न करो तो सात समुद्र की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि छावोगी तो नो नाथ चौरासी की दुहाई।

इस प्रकार मन्त्र प्रयोग में न तो किसी प्रकार से मंत्र सिद्धि की आवश्यकता होती है न दीपक, अगरबत्ती या अन्य विधि विधान की केवल मात्र मन्त्र उच्चारण करना ही पर्याप्त होता है।

बुद्धि बढ़ाने व परीक्षा में निश्चित पास होने के लिए

निरप्य प्रातःकाल उठकर स्नान कर, सरस्वती के चित्र के सामने इक्कीस बार इस स्तोत्र (मन्त्र) का पाठ करने से मन्त्र बुद्धि बालकों की बुद्धि तो बढ़ती ही है, परीक्षा में भी अच्छे स्तर से सफलता मिलती है, इन्द्रधनु में अनुकूलता प्राप्त होती है और निश्चय से संबंधित सभी कार्यों में उन्नति होती है।

मन्त्र

श्वेत-पद्मासना देवी श्वेत-पुष्पोपशोभिता
श्वेताम्बर-धरा निर्या श्वेत-गन्धानुलेपना ।
श्वेताक्ष-सूत्र-हस्ता च श्वेत-चन्दन-चर्चिता
श्वेत-वीणा-धरा शुभ्रा श्वेतालंकार-भूषिता
वन्दिता सिद्ध-गन्धर्वैरर्चिता सुर-दानवं
पूजिता मुनिभिः सर्वैर्भूषिभिः स्तुयते सदा
स्तोत्रेणानेय तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्
ये स्मरन्ति विसन्ध्यायां सर्व-विद्यां लभन्ति ते ॥

श्रीधर लेने का मन्त्र

किसी भी प्रकार की श्रीधर लेने से पूर्व यदि इस मन्त्र का मात्र पांच बार उच्चारण करें और फिर श्रीधर ग्रहण करें, तो श्रीधर का प्रभाव तुरन्त होता है, अनुभूत होता है, और तुरन्त शोभाहीन समाप्त होती है।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं वं धमृतेष्वरि । एहि एहि मम सकल सिद्धि कुरु हूं फट्

घर निवारण के लिए

छोटा-मोटा बुझार हर घर में आता ही रहता है, और इससे काफी क्षत्राणि भी श्रीधरियां तो लेनी ही पड़ती है, साथ ही साथ काफी कमजोरी भी आ जाती है वही नहीं अगितु इस प्रकार की श्रीधर लेने से काफी दिनों बाद बुझार समाप्त होता है ।

पर निम्नलिखित मन्त्र से सात दाने सरसों के लेकर सात बार यह मन्त्र पढ़कर वे दाने रोगी पर घुमावे और उसके शरीर पर ही फेंक दें, इस प्रकार सात बार प्रयोग करें ।

केवल एक दिन ऐसा प्रयोग करने से ही निश्चित रूप से बुझार समाप्त हो जाता है ।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो
ज्योतिः परमाय नमो नमः सिद्धि रुद्र आज्ञोपयति
स्वाहा ।

वास्तव में ही यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल एवं सुप्रदायक है ।

क्रोध नाश के लिए

कई व्यक्तियों की छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आ जाता है, इससे उनकी स्वयं की ही हानि होती है, ऐसे व्यक्ति बाद में पछताते ही हैं, परन्तु उस समय वे अपने सामने नहीं रहते और क्रोध उन पर हावी हो जाता है ।

इस क्रोध की प्रतिरेक्ता से घर में अशांति, कलह, मित्रों में विरोध और स्वयं के शरीर की हानि होती है ।

प्रातःकाल निम्नमन्त्र का मात्र इसकोल बार उच्चारण कर तीन बार पातों से झुल्ला कर बाहर जावे तो दिन भर क्रोध नियन्त्रण रहता है, और होने वाली हानि से बचाव हो जाता है ।

मन्त्र

ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्वे-क्रोधोपशमति स्वाहा

वस्तुतः प्रत्येक पुरुष या स्त्री को मात्र पांच मिनट का यह प्रयोग ही सुबह उठ कर ही लेना चाहिए ।

अशुभ स्वप्न के प्रभाव का नाश

कई बार रात्रि को अशुभ स्वप्न आने से व्यक्ति

दिन भर चिन्तित बना रहता है, मन में चिन्तना रहती है, और हृदय में बराबर आशका बर्फी रहती है, कि कहीं यह अशुभ स्वप्न तत्त्व न हो जाय।

इसके लिए जब रात्रि को ऐसा स्वप्न आवे, तो सुबह उठकर स्नान कर आसन पर बैठकर इतनीस बार इस मन्त्र का उच्चारण कर लिया जाय तो अशुभ स्वप्न का नाश हो जाता है, और उसका कोई विपरीत असर भोगना नहीं पड़ता।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गति-नाशिन्य महा-मायायै स्वाहा

वस्तुतः इस प्रकार का प्रयोग कर लेना चाहिए जिससे कि दिन भर आनन्द से व्यतीत हो।

समस्त प्रकार के मंगल के लिए

मेरे कहने से सैकड़ों साधकों ने इस प्रयोग की आज्ञा माया है, और उन्हें नित्य सफलता प्राप्त हुई है, नित्य पांच माला मन्त्र जब प्रातःकाल निम्न मन्त्र की करें तो उसका दिन भर आनन्द से व्यतीत होता है, सभी प्रकार से मंगल बना रहता है, और जीवन में उस दिन किसी प्रकार की अड़चन कठिनाई नहीं आती।

इसमें किसी भीप्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है, दिना, भा. न. पूष, दीप आदि के संकट की कोई आवश्यकता नहीं है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लीं क्लीं फट्

धन वृद्धि के लिये

नित्य प्रातःकाल उठकर निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जब करें और बाद में अपने कार्य या व्यापार के

लिए जावे तब कुछ ही दिनों में आश्चर्यजनक रूप से धन की वृद्धि होने लगती है, एका हुआ या फंसा हुआ पसा अपने लगता है, और वह ज़्यादा सुखमय हो जाता है।

मन्त्र

ॐ अथ कुबेराय वैश्वरूपाय धन-दाय्यादि पतये धन-धान्य-समृद्धि मे देहि दायय स्वाहा

इस मन्त्र जब में भी आसन, अंगरवती, दीपक या माला का कोई संकट नहीं है।

स्वप्न से प्रश्न का उत्तर जानने के लिए

नित्य प्रतिदिन के जीवन में ऐसे कई प्रश्न उपस्थित होते हैं, जिनका तत्काल निर्णय लेना कठिन होता है, ऐसी स्थिति में साधक रात्रि को स्नान कर प्रश्न को एक कागज पर लिख कर स्वप्नेश्वरी देवी का ध्यान कर वह प्रश्न लिखा हुआ कागज अपने मिरहाने तकिये के नीचे रख दें और सो जाय।

उसी रात्रि को स्वप्नेश्वरी देवी उसे स्वप्न में अवश्य ही दर्शन देती है, और उसके उम बटिल प्रश्न का उत्तर समाधान कर देती है, और वह समाधान अपने आने वाले समय में विस्तृत अनुकूल सिद्ध होता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्ये विश्वे वद वद स्वाहा

इस प्रयोग को कई लोगों ने सैकड़ों बार आजमाया है और हमेशा इसका निर्णय सही और प्रामाणिक रहा है, इसके लिए भी किसी भी प्रकार की साधना या मन्त्र भक्तियों की आवश्यकता नहीं है।

संकट निवारण के लिए

जीवन में आकस्मिक संकट, राज्य भय, या बीमारी,

कोई भी और कठिनाई से कभी से कभी से किसी निमित्त से यह प्रार्थना कर निवारण के

कोई भी और कठिनाई से कभी से कभी से किसी निमित्त से यह प्रार्थना कर निवारण के

ॐ नमो हनुमन्त

इस प्रकार प्रति दिन नित्य नौबीस वरदा नित्य नमस्कार उस योग्य नित्य नमस्कार दिन तक

आपके दिन अनुकूल नित्य नमस्कारों के दिन के भीतर-भीतर नित्य नमस्कारों से मुक्ति से समर्थ होता है

श्री विवाह के

विवाह से कुछ दिन पूर्व नित्य नमस्कार कर उसके स निमित्त नमस्कार की करें।

आपका दिन नमस्कार वरमे दे

आप नमस्कार दिन

सोझाही और कठिनाई भाती हो रहता है, ऐसी स्थिति में अच्छे से अच्छा साधना भी विफल हो जाता है, ऐसी स्थिति में यह प्रयोग उसके लिए अत्यधिक अनुकूल एवं सफल निवारण के लिए शुभदायक है।

बंजलवार की रक्त चन्दन की घनी हुई हनुमान जी की मूर्ति की सन्ने सामने स्थापित करें, लाल रंग के वासन पर मूर्ति को रखें, लुद भी स्नान कर लाल वस्त्र पहना करें, मूर्ति के सिन्दूर लगावे और गुड़ का भोग लगावे फिर मुँह की माला से ग्यारह माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र

ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशाय आवेशाय स्वाहा

इस प्रकार प्रति दिन करें, मूर्ति के सामने जो भोग लगावे बीघस पण्डा पड़ा रहे, दूसरे दिन नया भोग लगावे समय उस भोग की किसी वस्तु में रख दें, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करें।

बारहवें दिन अतुल्यान पूरा हो जाने पर वह सारा केवल गरीब ब्राह्मणों में बांट दें ऐसा करने से ग्यारह दिन के भीतर-भीतर सफल निवारण हो जाता है, और व्यक्ति समस्याओं से मुक्त हो कर पूर्ण अनुकूलता प्राप्त करने में समर्थ होता है।

श्रीघ्न विवाह के लिए

रविवार से कुंवारी कन्या भगवती दुर्गा (कात्यायनी) का पूजन कर उसके सामने ही ग्यारह माला मन्त्र जप निम्न मन्त्र की करें।

मन्त्र

कात्यायनि महा-माये महा-योगिन्यधीश्वरि योग्य वरमे देहि पति मे कुरुते नमः

मात्र ग्यारह दिन तक इसको करते से निश्चय ही

विवाह की बात-चीत चलने लगती है और उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

यह प्रयोग आश्चर्या हुआ है, जिन कन्याओं का विवाह नहीं हो रहा हो, उन्हें यह अवश्य करना चाहिए।

यदि उस कन्या की किसी निश्चित पति की प्राप्ति के लिए ही प्रयोग करना है तो याकी विधान तो यही है पर उपरोक्त मन्त्र के स्नान पर निम्न मन्त्र का जप करें —

मन्त्र

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि
अमुक-सुतं अमुकं देवि पति मे कुरुते नमः

इसमें "अमुक सुत" में होने वाले पति के पिता का नाम ले "अमुक" के स्थान पर होने वाले पति के नाम का उच्चारण करें।

ऐसा करने पर अवश्य ही उसे सफलता प्राप्त होती है।

समस्त इच्छाओं की पूर्ति हेतु

यदि तिल सुबह और शाम निम्न मन्त्र का ग्यारह बार उच्चारण करें तो उसके सारे काम स्वतः होते रहते हैं—

मन्त्र

शार्दा दुर्गा वेद-गर्भा अम्बिका भद्र-काश्यपी
भद्रा क्षेमा क्षेम-करी तैक-बाहुनैमामि ताम्

वस्तुतः ये सभी प्रयोग दिखने में सरल हैं, पर इनका प्रयोग और प्रभाव अचूक होता है, तथा इसमें पूर्ण सुख, एव सौभाग्य की प्राप्ति होती है।



★ यह जीवन ज्ञान यज्ञ शाला है ★

कुछ लोगों में जल्दगी से ज्यादा जीवट शक्ति होती है, और उसके सहारे अपने जीवन में वास्तविक लक्ष्य की प्राप्ति कर ही लेते हैं, चाप ऐसे व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं, जो कुण्डलिनी जागरण साधना के लिए २२ बार प्रयत्न किया, और प्रत्येक प्रयत्न असफल रहा। उसकी उम्र ७० साल की थी, दुबला पतला शरीर, घसी हुई आँखें, पके हुए बाल और चाल में किंचित लड़खड़ाहट।

पर फिर भी उसके मन की एक मात्र आकांक्षा और इच्छा यही थी, कि एक बार जीवन के शक्तिरिक्त तन्त्रों को जागृत किया जाय और पूर्ण कुण्डलिनी जागरण कर इष्ट से साक्षात्कार कर लिया जाय, यही उस के प्रस्ताव भाई ऐमैं ही जीवट के व्यक्ति रहे हैं, पूरा घर उनका विरोधी हो गया, घर वाले उसे सनकी समझने लगे और पुत्रों से अत्यधिक मतभेद बन गया, वे सभी चाहते थे, कि जब जिन्दगी के वर्ष बहुत कम बच गये हैं, फिर जब इस उम्र में कुण्डलिनी जागरण या अन्य साधनाएँ करने से क्या लाभ ?

परन्तु प्रस्ताव भाई में शक्तिरिक्त ऊर्जा प्रवाह था, वह उन व्यक्तियों में से नहीं था, जो हिम्मत हार कर बैठ जाय, उसने बराबर प्रयत्न जारी रखा, पचास का बडोर आग्रह किया वेति कियार्थं सम्पन्न की और मूलाधार से लगाकर आकाश तक जागृत करने के प्रति बराबर संवैष्ट बने रहे, और आखिर २३वीं बार कुण्डलिनी जागरण में पूर्ण सफल हो गये।

और इसकी आश्चर्यजनक परिणती हुई, पके हुए सफेद बाल शायित काल होने लगे, पैरों का लगभग पत जाया रहा, स्मरण शक्ति बड़ गई, पैरों की चमक और आँखों की लपक में अत्यधिक वृद्धि हो गई और ऐसा लगने लगा कि प्रभुदास भाई पुनः जवानों की ओर लौटने लगे हैं, ७० साल के बूढ़ ने अपने कर्म के माध्यम से तुम्हें की ओर साधकों को प्रामाणिक रूप से यह शिक्षा दे दी कि यदि व्यक्ति निश्चय कर ले तो अवश्य ही अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करता ही है।

जो जिन्दगी का आधा सफर पूरा करने से पहले ही चुक जाते हैं, उनके लिए तो कुछ भी कहना व्यर्थ है, उनके मन में हताशा और निराशा घर कर जाती है कि अब हम जीवन में कुछ भी नहीं कर पायेंगे बार-बार उनके मन पर वही चोट पड़ती रहती है, कि जब तो हम मृत्यु के निकट हैं ज्यादा से ज्यादा दो-चार साल और भी लेंगे, फिर ये सब खट-पट करने की क्या जरूरत और अब इस उम्र में साधना करने से होगा भी क्या। और ऐसे व्यक्ति अपने जीवन का मूल्य ही मुला बँटते हैं, उनको इस बात का अहसास ही नहीं होता कि जीवन की प्राचीन उम्र बीतने के बाव ही साधना का सही समय प्रारम्भ होता है, अब हम गृहस्थी की समस्याओं से थोड़े बहुत मुक्त होने लगते हैं, सब हम ज्यादा अच्छी तरह से अपने जीवन को समझने लगते हैं, ऐसे समय में ही साधना सम्पन्न की जा सकती है।

और वह साधिका

मणि बहिन से तो प्रत्येक साधक और गुजराती भाई परिचित है, बड़ोदा की रहने वाली यह महिला आधे के अधिक उम्र पार कर चुकी थी, घर में वरिष्ठता का सम्मान प्राप्त हुआ था, पति हृदय रोग से पीड़ित था और वह कहीं उठने बैठने या आने जाने के लिए असमर्थ था। लड़की बड़ी हो गयी थी, और उसकी शादी की चिन्ता बराबर मणि बहन को डाले जा रही थी, एक प्रकार से देखा जाय तो वह अर्थ, दुःख, संताप और परेशानियों से घिर गई थी।

मणि बहिन की उम्र ही, गई की ४५ वर्ष के लगभग, और तारा शरीर जर्जर तथा निराल हो चुका था। शरीर में इतनी ताकत ही नहीं रही थी, कि कुछ किया जा सके, जीवन के मध्य में ही बुढ़ापा उस पर हावी हो गया था।

किर भी उसने हिम्मत नहीं हारी, शरीर में ऊर्जा का अतिरिक्त प्रवाह था जो उसे बराबर जोरद शक्ति देता जाता था, और ऐसी स्थिति में उसने तारा साधना सम्पन्न करने का निश्चय किया, उसके मन में वह पूर्ण विश्वास था कि मैं अवश्य ही तारा साधना में सफलता प्राप्त करूँगी ही।

उसने तारा साधना के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की, उसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी और रहस्य की प्राप्त करने का प्रयास किया और वह तारा साधना सम्पन्न करने के लिए बैठ गई, इससे घर के कामों में व्यवधान आने लगा, समय पर भोजन नहीं बनता था, पति की सेवा में भी थोड़ी बहुत स्मृन्ता आने लगी और घर के सभी सदस्यों की तरफ से उस पर प्रहार से होने लगे पर वह निश्चिन्त थी, उसकी आत्मा स्पष्ट रूप से कह रही थी, कि मैं दूर हालत में तारा साधना सम्पन्न करूँगी ही, और मुझे इसमें सफलता पानी ही है।

वह पाँच बार सवा लाख मन्त्र अव सम्पन्न किये पर हर बार उसे असफलता ही हाथ लगी, परन्तु जैसा कि मैंने बताया कुछ लोगों में अतिरिक्त ऊर्जा प्रवाह होता है, मणि बहिन में भी इस ऊर्जा का अक्षय भंडार स्वास्त था और उसी के बल पर वह बराबर आगे बढ़ रही थी, उसने पूरे घर के विरोध और दवाव के बावजूद भी छठी बार तारा साधना सम्पन्न करने का निश्चय किया और इस बार पूर्ण सफलता पा गई। भगवती तारा के उसे साक्षात् दर्शन हुए, और जिस जगह की वह कहना ही नहीं कर पाती थी वही क्षण उसके सामने साक्षात् हो गया।

सगले चार महीनों में उसे गुजरात राज्य की लोदरी का प्रथम पुरस्कार तो मिला ही, लड़की का विवाह भी दो महीनों के भीतर-भीतर हो गया, पति का स्वास्थ्य आश्चर्यजनक रूप से सुधरने लगा और मणि बहिन का तो जैसे काया कल्प हो गया, उम्मीद ही नहीं की जा सकती थी कि यह सही मणि बहिन है जो कूखी हुई निराल, बेबस और दुःखी थी, उसके चेहरे पर एक अजीब सा आकर्षण व्याप्त हो गया और घर की वरिष्ठता हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो गई। उसके और उसके परिवर्तन पर पूरा बड़ोदा आश्चर्य कर रहा था, गुजरात के महत्वपूर्ण समाचार पत्रों में उसके फोटो और इन्टरव्यू प्रकाशित किये पर इन सब के मूल में था, साधना के प्रति समर्पण भाव, दृढ़ धारणा और पक्का विश्वास।

हकीकत तो यह है कि जातीय-पंचास की प्राप्ति भोगने के बाद हम अपनी विविधताओं को समाप्त कर देते हैं और अपना छोटा सा कार्य क्षेत्र बना लेते हैं, और ऐसे संकीर्ण क्षेत्र में हम अपने आपको बांध लेते हैं, जीवन में किसी प्रकार का कोई उत्साह या उमंग नहीं रहती एक तरह से देखा जाय तो हम अपने ही गिरे में कैद हो कर रह जाते हैं।

यदि आप कुछ करना चाहते हैं तो आपको सावधान

हो जाने की जरूरत है, एक जगह बड़ा हुआ पानी गँवा हो जाता है, और जगमग सदाश पँवा हो जाती है, आपको निरन्तर परिवर्तन घपनाये रहना है, निरन्तर आगे बढ़ते रहना है, इस धम को मन से निकाल दीजिये किन शोध कर सकते हैं, न प्रयोग कर सकते हैं, और न सफलता पा सकते हैं ।

हो सकता है, आपको पहली बार दूसरी बार या तीसरी बार असफलता मिले, हो सकता है, आप पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़े और यह भी हो सकता है, कि चारों तरफ से शत्रुजनाओं की बौछार होवे लगे, पर इनसे आपको घबराने की जरूरत नहीं है, ऐसे बुरे समय का तो अपने आप ही विशेष मूल्य होता है, और ऐसे में ही बने और बुरे की पहचान होती है, ऐसे समय में तो अतिरिक्त ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए और अपने बड़कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेनी चाहिए।

सफलताएं और असफलताएं

जित व्यक्ति के जीवन में बौद्ध शक्ति होती है, वे अपनी आदतों और स्वभाव में तुरन्त परिवर्तन ले आते हैं, विचारों की कड़ी से अपने आपको मुक्त कर लेते हैं, किसी प्रकार की अड़बट उनके लिए बाधक नहीं बनती वे जोड़िम उठाने के लिए तत्पर रहते हैं, और मान-सम्मान की भी शक्तीनता प्रत्यक्ष स्वीकार करते हैं।

यह बात पूरी तरह से समझ लीजिये कि आपके बदलने से आपको कोई बुरा भला नहीं कहना, यह बात भी समझ ले कि चाहे आप कुछ भी कर ले, कुछ लोग कभी भी आपसे लुप्त नहीं होंगे, आपके प्रति कभी भी प्रेम भाव प्रदर्शित नहीं करेंगे, सभी लोग अपनी ही चिन्ताओं से ग्रस्त है, उनकी इस बात की कोई विवशता नहीं है, कि आप क्या कर रहे हैं, खीर क्या नहीं कर रहे हैं।

ऐसे समय में आपको आत्मबोध लेखना चाहिए,

अपने आपसे आत्म साक्षात्कार करना चाहिए, इस बात का चिन्तन करना चाहिए, कि क्या आप गलत कर रहे हैं, कोई नई चीज सीखना गलत नहीं होता। इसका कारण यह है, कि आप स्वयं अपने जीवन के प्रति उत्तरदायी हैं, जीवन का अधिकतम भाग आपने भोगा है, और आपको इस बात का ज्ञान है, कि जीवन में क्या सही है, और क्या सही नहीं है।

जो व्यक्ति शिक्षर पर पहुँचना चाहते हैं, वे बराबर प्रयत्नशील बने रहते हैं, हर क्षण वे कुछ न कुछ नया सीखते ही रहते हैं, उनको अपनी जिन्दगी के प्रति दिलचस्पी होती है, जिसके माध्यम से वे जीवन के मूल्यों को प्राप्त कर लेते हैं, जो जीवन का परम भानन्द है, साधना के द्वारा ही व्यक्ति अपने बुझने को रोक सकता है, साधना ही जीवन को मृत्यु को समृत्यु में परिवर्तित कर सकती है, साधना ही जीवन में भानन्द और उभय प्रदान कर सकती है, साधना के द्वारा ही खोया हुआ जीवन पुनः प्राप्त किया जा सकता है, और साधना के द्वारा ही जीवन का रस जीवन का भानन्द और जीवन का प्रयोजन प्राप्त किया जा सकता है।

इस समय मुझे संघर्षों के प्रसिद्ध लेखकों की पंक्ति याद आ रही है, कि जीवन का वास्तविक सत्यन्द ऐसे उद्देश्य के लिए समय को व्यतीत करना है, जिसे आप महान समझते हैं, जिसके द्वारा आनन्द और उमंग प्राप्त की जाती है।

यजाय इसके कि आप अपने ही बर में बसे हुए रहे, अपने ही स्वार्थ में निंदी के लौंडे बने रहे, इसकी अपेक्षा समाज के लिए देश के लिए और अपने प्रथम के लिए आप कुछ ऐसा करें, जो कि आपके जीवन का लक्ष्य हो जिसके माध्यम से आप इस सर्व को प्राप्त कर सके, जिसे जीने वाले व्यक्तियों के द्वारा ही यह संसार शान्द बन है, और ऐसे व्यक्ति ही अपने जीवन का पूर्ण आनन्द लेने में सक्षम हो पाते हैं।

150

होना चाहिये

कोई भी कार्य

सीमा परियोजना में उन व
 सागर हो कर हो रहने
 उसे सीमा बालीबनना
 सीमा बालीबनना कर
 है, का अपने आदमी
 जिस में ऐसे व्यक्तियों
 सम्बन्ध हो कर हो कि
 होकर कर सम्बन्धमय
 वह कर सोने कि का
 प्राप्त कर कर दूरा प्रय
 की कहिये है, इन का
 बाली बाली विधेयन है,
 जिस कर सीमा उनमें
 सीमा की काम सम्बन्ध

कृष्ण वर्णों पहले ।
जल नाला समस्तक म
अपनी शिखर के चल
आव के अन्तिम सीरे
की जा सकती थी, न
कहा जा सके है, इसी

★ स्वर्ण सिद्धि ★

कोई कठिन नहीं है स्वर्ण बनाना

होना चाहिये आपको अपने आप पर भरोसा और परिश्रम की भावना

कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता, यदि लगन से और परिश्रम से उस कार्य पर लग जाय तो वह कार्य सम्भव हो कर ही रहता है, पर हम में गलतियाँ निकालने और आलोचना करने की आदत पड़ गई है, किसी की भी आलोचना करना मध्यमिक धार्मिक और सरल कार्य है, पर इनसे आदमी महान नहीं बनता। देश में और विश्व में ऐसे व्यक्ति के नाम की गणना भी नहीं होती, अच्छा तो यह हो कि आप आलोचनात्मक भावना को छोड़ कर रचनात्मक रुख अपनायें, एक क्षण के लिए यह धर लीजिये कि शायद ऐसा भी हो सकता है, और आप उस पर पुरा प्रयत्न करें, उससे सम्बन्धित जितना भी चाहिए है, इस तर्क को पक लें, उससे सम्बन्धित यदि कोई विशेषज्ञ है, तो उनके सम्पर्क में जायें, उनके लिए हमें और उनके वह विश्वास प्राप्त करें, बुनिया में कोई भी काम असम्भव नहीं है।

कुछ वर्षों पहले हिमालय की सर्वोच्च चोटी एवरेस्ट पर चढ़ना असम्भव माना जाता था, पर लेनसिंह ने इसे अपनी हिम्मत के बल पर सम्भव कर दिखाया, उत्तरी ध्रुव के सन्निध और पर जाने की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी, पर एक दो नहीं दस-दस लोग वहाँ तक जा पाये हैं, इसलिये जेल को पार करना कठिन-

तम माना जाता था, पर जो धुन के पत्रके है, उन्होंने इंगलिश जेल को तो तैर कर पार किया ही, दोनों तरफ से भी उसे तैर कर पार कर अपनी श्रियता सिद्ध कर दी, १ व २ नहीं ऐसे सँकड़ों उदाहरण हैं, जिन सामान्य ने लगने वाले आदर्शियों ने असम्भव कार्य संभव कर दिखाये हैं।

इन लोगों ने आलोचनाओं में अपना समय बरबाद नहीं किया, इन लोगों ने ऐसे किसी भी कार्य को असम्भव नहीं माना। ऐसे लोगों ने इस बात को भी किन्ता नहीं की कि समाज क्या कहेगा, इन लोगों के मन में तो संसार में अपने नाम का डंका बजाना था, और ऐसा उन्होंने कर दिखाया, स्वर्ण बनाना भी ऐसा ही कठिन और असम्भव कार्य लगता है, परन्तु जो हनु निश्चयी है, जो हिम्मतवान है, जो कुछ कर गूँजरने की क्षमता रखते हैं, उनके लिए यह असम्भव नहीं, उन्होंने इस क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की है, और भौतिक दृष्टि से सभी समस्याओं से मुक्ति पाई है।

जो रसायन शास्त्र के बारे में थोड़ी बहुत भी जानकारी रखते हैं, वे इस बात की अच्छी तरह से जानते हैं, कि धातु परिवर्तन कोई असम्भव किया नहीं, आवश्यक

कता इस बात भी है, कि सही तरीके से कार्य सम्पन्न हो और सही मार्गदर्शक मिल जाय।

विदेशों में कार्य

कीमिया गिरी या घातु परिवर्तन के बारे में प्रयत्न भारत में ही नहीं विदेशों में भी हो रहे हैं और उन्होंने इनमें सफलता पाई है, श्री-श्री अमेरिका के मिस्टर बूच ने एक किताब प्रकाशित की है, जिसका नाम है 'केमिस्ट्री ऑफ़ लाइफ' इसमें लेखक ने भारतीय योगियों के साथ अपने बिलाने हुए बीस वर्षों का पुराना-पुरा आमाशुिक विवरण दिया है और बताया है, कि स्वर्ण बनाने की बात में वह कहीं-कहीं नहीं भटकता और आखिर में उसे वह विद्या प्राप्त हो ही गई।

इसके बाद बूच लगभग छः वर्षों तक उन योगियों से सीखा हुई, किपाओं पर प्रयत्न करता रहा, कई बार उसे असफलता मिली, कई बार वह एक घातु की सीने जैसे रंग में परिवर्तित हो कर देता था, पर सारा सीना नहीं बनता था, परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी, पुस्तक में उसको एक पंक्ति बहुत अच्छी है, 'यदि मैं असफल हो गया तो केवल मैं ही असफल होता' पर यदि मैं सफल हो गया तो पूरे संसार में मेरा ही नहीं मेरे पूरे परिवार का नाम प्रसिद्ध हो जायेगा, इस उक्ति को उसने हमेशा अपने सामने रखा और इस क्षेत्र में बराबर प्रयत्न करता रहा, आज वह अमेरिका का सबसे धनी व्यक्ति है, एक वर्ष में उसने तीन-तीन बरक स्थापित किये हैं, उसके कूद के दो हवाई जहाज हैं, और समुद्र के अन्दर एक सुन्दर टापू को उसने खरीद लिया है।

यह सब चमत्कार कैसे हो गया उसने अपनी पुस्तक में स्वीकार किया है, कि यह उन भारतीयों की देन है, जिनके साथ मुझे घूमने का अवसर मिला, और जिनो ने इन क्रियाओं की सीख सका, आज मैं जो कुछ हूँ, वह इन स्वर्ण तन्त्र की श्रद्धा से ही है।

और आपको आश्चर्य होगा कि एक वर्ष में इस

पुस्तक को बारह लाख प्रतियां बिक चुकी है, और अठारह विभिन्न भाषाओं में इस पुस्तक का अनुबाव हो चुका है, पुस्तक में लेखक ने योगियों से प्राप्त ज्यों के त्यों उदाहरण, दोहों या वाक्य दिये हैं, और उसका सामान्य अर्थ भी दिया है, उसने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है, कि इसे पढ़कर पहली बार में सफलता मिल जाय, यह जरूरी नहीं है, क्योंकि यह पूरा कार्य प्रैक्टिकल कार्य है, पुस्तक पढ़ कर कोई व्यक्ति तैयार होख जाय, पर जरूरी नहीं होता, इसके लिए तो पानी में उतरना ही होता है, कई बार उनके नाक और मुँह में पानी आ सकता है, पर यथोक्तता वह तैयार होख ही लेगा।

इस पुस्तक में कुछ महत्वपूर्ण योगियों के फोटो, उनका सक्षिप्त परिचय, निवास स्थान और उनसे प्राप्त कुटुम्बियों का विवरण दिया है, और बताया है, कि इन गूढ़ उक्तियों के अनुसार प्रयत्न करने पर घातु परिवर्तन सिद्धि प्राप्त हो सकती है, इस प्रक्रिया में तो कोई सत्य तथ्य है, न कोई आसन्न प्राणवाय। न रुद्धा बन्धन सावि का भ्रम है, और न पञ्चासन लगा कर माला धारण का विधान, इसमें तो कुछ भौतिक शक्ति से रसायनिक क्रिया सम्भव करने का विधान है, और इस विधान में सफलता पाई जा सकती है।

तो फिर आपमें क्या कमी है

यदि अमेरिका का एक निर्धन असहाय, गुमनाम ता व्यक्ति अपने परिश्रम और प्रयत्न के बल पर इस विद्या को प्राप्त कर सफलता पा सकता है, और एक ही क्षण में समुद्र के अन्तिम शिखर पर पहुँच सकता है, तो फिर आपमें क्या कमी है, जब एक बाह्य का व्यक्ति भारत-वर्ष में भटक कर ऐसी रुद्धभूत ज्ञान प्रक्रिया को सीख सकता है, तो फिर आप भी इसमें सफलता पा सकते हैं।

पर हम लोगों में एक ही बात की कमी है, कि हम पूरी तरह से अविश्वसनी व्यक्ति हैं, हमें तो अपने आप में ही विश्वास नहीं है, आलोचना हमारा गुण धर्म बन गया है, हम पवित्र की आलोचना कर बैठते हैं, इस में

कोई गुरु किसी की
कल्पना करते हैं, न
उन को कोई भी
उत्तरा जाता है
है, उनकी कल्पना
कल्पना कल्पना न
कल्पना कल्पना नहीं
है। कल्पना कल्पना
विश्वास की होने की
और एक की कल्पना
असंभव प्रयत्न के
सीमा के अन्तर्गत
असंभव हो जाने की
नहीं किता में प्रयत्न
तो सीमा में सब
ने ही नहीं दूरे कि

इसके अन्तर्गत
आगत हो जाने के
नहीं है —

स्वर्ण रसायन

- १- अश्वेरोक्त
- २- लक्ष्मी तंत्र
- ३- लक्ष्मी तंत्र
- ४- लक्ष्मी तंत्र
- ५- लक्ष्मी तंत्र
- ६- लक्ष्मी तंत्र
- ७- लक्ष्मी तंत्र
- ८- लक्ष्मी तंत्र
- ९- लक्ष्मी तंत्र
- १०- लक्ष्मी तंत्र
- ११- लक्ष्मी तंत्र
- १२- लक्ष्मी तंत्र
- १३- लक्ष्मी तंत्र

को तुरन्त वेशों की भी मान्यता करने में आत्म सुख का अनुभव करते हैं, और ऐसे भी व्यक्ति मिल जायेंगे, जो एक केव को पढ़ कर प्रविश्वस्त से मुह विचका लेने और उनका प्रयोग यही होगा कि ऐसा मोह ही हो सकता है, इसकी अपेक्षा यदि हम उस ज्ञान को प्राप्त कर उसके अनुसार परिश्रम करें और पूरे समर्पण भाव में कार्य करना आरम्भ करें तो निश्चित सफलता प्राप्त होती ही है। आत्मसत्ता रचनात्मक कार्य करने की है, सहज विचकाही होने की है पूरी तरह से परिश्रम करने की है, और एक दो साल या दो - चार माहों में पूरी तरह से सफल भाव में इस क्षेत्र में कार्य सम्पन्न करने की है। नीचे के तन्त्रों में यदि किसी वक्ता से इस कार्य में सफल हो गये तो, मन में संतोष अवश्य रहेगा कि हमने सही दिशा में प्रयत्न किया है और यदि सफल हो गये तो जीवन में सब कुछ प्राप्त हो जायेगा, और भारतवर्ष में ही नहीं पूरे विश्व में नाम छा जायेगा।

इसके लिये हम इससे संबंधित जितना भी साहित्य प्राप्त हो सके उसको पढ़ ले कुछ नाम नीचे स्पष्ट कर रहा हूँ —

स्वर्ण रसायन से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रन्थ

- १- ऋग्वेदोक्त श्री सूक्त
- २- तन्त्री तंत्र
- ३- रुद्रयामल तन्त्र
- ४- काकचण्डीश्वरी कल्प तन्त्र
- ५- रस हृदय तन्त्र - (गोविंदपादाचार्यकृत)
- ६- गोरक्षा संहिता - (गोरक्षनाथ रचित)
- ७- रसाव्यय (कंकालयोगी कृत)
- ८- रस रत्नाकर रसायनखण्ड (नित्यनाथ सिद्ध)
- ९- रसरत्नाकर ऋद्धिखण्ड वृद्धिखण्ड ()
- १०- रसार्णव (भैरवानन्द योगी कृत)
- ११- आनन्द कन्द (मंथान - भैरव)
- १२- रस पद्धति - श्री विदुनाथ
- १३- रसोपनिषद् - राजा मदनरसकृत

- १४- रसेन्द्र पुंडामणि - सोमदेव
- १५- रस प्रकाश मुचाकर - यशोधर
- १६- रस कौमुदी - ज्ञानचन्द्र
- १७- सिद्ध रसायन - व० कु० मोरे
- १८- पारद-संहिता - सकलित

इसके अलावा भी स्वर्ण तन्त्र से संबंधित साहित्य प्रकाशित है, और यदि उपरि इस क्षेत्र में निश्चय ही कर ले तो वह प्रयत्न कर कुछ अन्य ग्रन्थों का भी अध्ययन कर सकता है।

इसके अलावा कुछ उच्च थोटि के योगी भी दुखे पर मिल सकते हैं, जिन्हें इस विद्या का प्रायोगिक ज्ञान है। और वे सिखाने में भी तत्पर हैं। आत्मसत्ता है मूल जैसे समर्पित व्यक्तित्व की, जो पूरा परिश्रम कर अपनी बुन में बंध जाता है, और अन्त में सफलता प्राप्त कर ही लेता है।

धातु परिवर्तन - स्वर्ण किया

यूच में अपने ग्रन्थ में स्वर्ण बनाने से संबंधित कई प्रयोग दिये हैं, जो कि उसे विभिन्न योगियों से प्राप्त हुए हैं। ये प्रयोग सामान्य भाषा में और संस्कृत भाषा में हैं जिसका उसने अंग्रेजी में सरल अर्थ प्रस्तुत किया है। नीचे में संबंधित कुछ प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ, जिसके माध्यम में पाठक इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं—

स्वर्ण प्राप्ति - १

रक्तचित्तकमूलं तु काजिकं शुद्धपारदम्
कंगुराणी तेलसंयुक्तं सथै कल्पं मलेपयेत् ।
ताम्रपत्राणि तप्तानि तस्मिन् निक्षेपित्वा
एवं त्रिसप्तधा कुर्याद दिव्यं भवति काचिनं ॥

भावाथ

लाल चित्रक मूल की जड़ को लेकर नीचे बोधे

में उसकी घोंटे और इस प्रकार छः घंटे चोटने के बाद उस रस को छुड़ लाने के टुकड़े पर लेप कर दें, इसके बाद तीला थोथा, तेन्धा तमक व कुं कुम बराबर मात्रा में लेकर इस ताम्बे के टुकड़े पर डालकर कड़ाई में रख दें और इसे बीस किलो पानी में पकावे, जब एक किलो पानी रह जाय तो ताम्बे का टुकड़ा निश्चय ही स्वर्ण बन जावेगा।

स्वर्ण प्राप्ति प्रयोग-२

क्षीरकंदमर्धं क्षीरे तप्तं ताम्रं निषेचयेत्
अतवारं प्रयत्नेन तत्ताम्रं कांचनं भवेत्

भावार्थ

गन्धक, रत चन्दन, और कदवली बराबर मात्रा में लेकर उसमें ताम्बे को डाल दें और उस किलो पानी में पकावे जब पानी एक किलो रह जाय तो उस ताम्बे के टुकड़े को बाहर निकाल दें।

इस प्रकार सात बार करें तो वह ताम्बे का टुकड़ा निश्चय ही सोने में बदल जाता है।

स्वर्ण प्राप्ति प्रयोग-३

पारदं पलमेकं च हरितालं च तत्समं
गंधकं च त्रयोः तुष्यं मर्दनीयं विशेषतः
पूर्ववद् द्रावितं कुत्वा दिव्यं भवति कांचनं

भावार्थ

एक भाग पारद, एक भाग हरिताल तथा दो भाग

गन्धक लेकर घाक के दूध में दिन भर मर्दन करें, फिर इसे बीस किलो पानी में पकावें, पकाने के बाद इसे बाहर निकाल दें और दो भाग ताम्बे को पानी की तरह पिघला कर इस पर डालें तो यह ताम्बा तुरन्त स्वर्ण में बदल जाता है।

स्वर्ण प्राप्ति प्रयोग-४

तापकस्य त्रयो भागा शिला भागा द्वयं तथा
म्लेच्छभागो भवेको पारदस्य तथा परः
कुमारो रसयोगेन भर्षयित्वा यथाविधि
दीपाग्निं तत्र कस्त व्यो दिव्य रूपं हि कांचनं

भावार्थ

तीन भाग हरताल, दो भाग मेनसिल तथा एक भाग हिंगुल को एक भाग पारे में घोंटे, फिर संवार पाटे के रस में मर्दन कर रात्रि को बीस किलो पानी में ताम्बे के साथ पकावे तो वह ताम्बा निश्चय ही स्वर्ण में बदल जाता है।

इसके अलावा भी वृत्त में अनेक ग्रन्थ में और भी कई प्रयोग दिये हैं, और उसने दावा किया है, कि इन प्रयोगों के माध्यम से ही उसने स्वर्ण प्राप्ति में सफलता पायी है, प्रामाणिक प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर भी यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि संस्कृत में दिये गये श्लोक प्रामाणिक हैं, और यदि इनका सहारा लेकर कोई रसायन क्रिया में उतरे तो उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी, ऐसा मुझे विश्वास है।



कय

जो साधना के व

लाने हैं, बिनकी अपनी
साधना प्रवेश शब्द
कालि सम्पत्ति है, परफा
किया से अपने शरीर को
कालि स्थित प्राणी को
से प्रवेश कराकर उसे र

आध्यात्म दर्शन इस
साधने पाप में अलग
कालि जन्म है, इसीलि
आध्यात्म ज्ञान कहीं दूर
आध्यात्म होते तो ऐसा

आध्यात्म को ही भारत
आध्यात्मिक देह तो एक जग
आध्यात्म दूर-दूर विचार
में रहा बने-बैठे अमेरिक
आध्यात्मिक जा पहुँचत
आध्यात्म हुआ होत
आध्यात्म की बलुवी
आध्यात्म के साथ सँकटों

क्या बला है परकाया प्रवेश

क्या ऐसा आज के युग में भी संभव है

जो साधना के बारे में थोड़ी बहुत भी जानकारी रखते हैं, वित्तो अपनी प्राचीन विद्याओं पर गर्व है, वे परकाया प्रवेश शब्द को और उसके अर्थ को भली भाँति समझते हैं, परकाया प्रवेश का तात्पर्य कुछ विशेष क्रिया से अपने शरीर को मृत्युत बना देना और अपने अतीत विचारों को निकाल कर दूसरे मुर्दा शरीर के अंदर कराकर उसे जीवन्त बना देना।

भारतीय दर्शन इस बात को स्वीकार करता है, कि वेद करने मान में अलग है, और प्राणों का अस्तित्व सर्वथा अलग है, इसीलिए कई बार स्वस्थ शरीर को छोड़कर प्राण कहीं दूर निकल जाते हैं, यदि वेद से अलग करने होते तो ऐसा सम्भव नहीं होता।

जिस को ही भारतीय दर्शन में 'मन' कहा है, और हमारी देह तो एक जगह पड़ी रहती है, और हमारा मन बहुत दूर-दूर विचरता कर लेता है, हम एक क्षण के दूर बैठे-बैठे अमेरिका का विचार करते ही हमारा मन अमेरिका जा पहुँचता है, और यदि वहाँ कोई घर या काम देखा हुआ होता है तो हम आँखें बन्द कर उस स्थान को बतुबी देख लेते हैं, यह क्रिया प्रत्येक मनुष्य के साथ सँकड़ों बार प्रदित है, लोगों को जो कई

बार कहते हुए सुना है, कि हमारे मन पर हमारा नियन्त्रण नहीं है, चाहते हुए भी हम अपने को रोक नहीं पाते। इन तथ्यों से इस बात की पुष्टि होती है, कि देह से सर्वथा अलग प्राण या मन का अलग अस्तित्व होता है, और उस पर आपाजपत: हमारा कोई नियन्त्रण नहीं होता।

परन्तु योग साधना के माध्यम से इस मन पर या प्राणों पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर सकते हैं, और जिस प्रकार से भी चाहे, उसका उपयोग कर सकते हैं, जब ऐसा नियन्त्रण स्थापित हो जाता है, तो मन से या प्राणों से जो भी कार्य करने को कहते हैं, कर लेते हैं।

परकाया प्रवेश भी साधक का अपने प्राणों पर पूर्णतः नियन्त्रण होना ही है, ऐसा साधक अपने प्राणों को आगा देता है, कि वह समुक्त मुँह शरीर में जाकर स्थित होता है, और इतनी निश्चित अवधि के बाद उस देह को छोड़ कर वापिस इसी शरीर में आता है।

शंकराचार्य और परकाया प्रवेश

आज से कुछ सौ वर्ष पहिले शंकराचार्य ने प्राणा-एक रूप से इस प्रयोग को सम्भव कर दिखाया था,

राजा को मृत्यु हो जाने पर शंकराचार्य ने अपने प्राणों को देह से प्रलग्न कर राजा की मृत देह में प्रवेश के लिया था, फलस्वरूप मृत राजा कुछ ही सेंकड़ों में जीवित हो उठा और राजा के शरीर में रह कर शंकराचार्य ने राज्य कार्य के विभिन्न अनुभवों को तो प्राप्त किया ही, साथ ही गृहस्थ जीवन की उन सुक्तियों का भी अनुभव किया जिसके माध्यम से वंश गतिशील होता है या स्थान उत्पन्न होती है।

इस प्रकार लगभग छः महिने तक शंकराचार्य का शरीर मृतवत् पड़ा रहा, और उनके प्राण राजा की मृत देह में रह कर राज्य कार्य करते रहे, इसके बाद निश्चित अवधि बीतने पर उन प्राणों ने राजा की देह को छोड़ दिया और वापिस अपने मूल देह में आ गये, और इस प्रकार शंकराचार्य की देह छः महिने बाद वापिस जीवित हो कर क्रियाशील हो सकी।

इस घटना से यह प्रतीति स्पष्ट होता है, कि यदि साधक चाहें तो कुछ विशेष सुक्तियों के माध्यम से अपनी देह से प्राणों को प्रलग्न कर किसी मृत शरीर में अपने प्राणों का संचार कर सकता है, इस पूरी प्रक्रिया में पहले वाली देह के अंगुष्ठ में मात्र स्पर्श बनना रहता है, जिससे शरीर चेतन्य रहता है, और जब वापिस प्राण उस शरीर में प्रवेश करते हैं, तो वह क्रियाशील हो कर कार्य करने लगता है।

पिछले कुछ सौ वर्षों से इस विद्या का लगभग खोप सा हो गया था, या यों कहा जाय कि बहुत ही कम भारतीय साधक या योगी दवे थे, जिनकी इस विद्या की प्राथमिक जानकारी थी, परन्तु अब यह विद्या कोई गोपनीय नहीं रही, योगियों ने और इससे संबंधित ग्रन्थेतराधों ने प्राचीन ग्रन्थों को ढुंढ निकाला है, इस साधना का सम्यक अध्ययन किया है और उन विधियों को ढुंढ निकाला है जिसके माध्यम से परकाया परिवर्तन किया जा सकता है।

परकाया प्रवेश से संबंधित प्रकाशित साहित्य

- १- मृत्यु विज्ञान (वाकचण्डीकृत)
- २- मृत्यु विज्ञान और परम पद (भैरवानन्द कृत)
- ३- देह तत्त्व (मन्थान श्रुति कृत)
- ४- योग और परकाया प्रवेश (स्वामी विश्वार्थ)
- ५- परकाया प्रवेश सिद्धि (गोरक्षनाथ रचित)
- ६- देह सिद्धि (स्वामी भैरवानन्द)
- ७- परकाया प्रवेश वीक्षा रहस्य (स्वामी महानन्द)
- ८- मनुष्य देह और ० मे (स्वामी सोमदेव)
- ९- एक अलौकिक साधना-परकाया (स्वामी ज्ञानदेव)
- १०- मृत्यु सिद्धि और परकाया प्रवेश (स्वामी विगुणानन्द)
- ११- निदेह आत्मा (मां योगमाया)
- १२- परकाया प्रवेश सिद्धि (श्रीवि गुरु प्रतापदेव)
- १३- परकाया प्रवेश और संत्र सिद्धि (योगी शत्रु तानन्द)
- १४- परकाया एवं सूर्य सिद्धि (स्वामी प्रलम्बानन्द)
- १५- परकाया प्रवेश उपासना रहस्य (मां श्री. अम्बिका)
- १६- परकाया सिद्धि (स्वामी योगेश्वर)
- १७- परकाया रहस्य (सैलेश्वर स्वामी)
- १८- माय साधना एवं परकाया प्रवेश (योगी वेदानन्द)

इन ग्रन्थों के माध्यम से साधक प्रयत्न करने पर इस क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त कर सकता है, ये सभी ग्रन्थ लगभग प्रकाशित हैं और प्रयत्न करने पर प्राप्त हो सकते हैं।

परकाया प्रवेश सिद्धि

परकाया प्रवेश की दो विधियाँ प्रचलित हैं, एक तो योग के द्वारा और दूसरी विशेष साधना के द्वारा, योग के द्वारा तो साधक अपने प्राणों का उत्थापन करके उसे जीवात्मा से संबंधित करता है, और उसे अपने नियंत्रण में ले कर मनोवाञ्छित स्थान पर पहुँचाने की सामर्थ्य प्राप्त करता है, इसके लिए योग्य गुरु के निर्देशन में कुछ विशेष साधन मूद्राएँ, और क्रियाओं का परिपालन करना होता है, ऐसा करने पर उसे अपनी

विनियोग

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सत्ये, हं जवले, हूँ स्मरके खर्वे,
कलीं रामे, हरके महापरिवृत्ती, शुन्यं परकाया
सिद्धिं तारव कृपिः गामश्री छन्दः, श्री गुरु देवता,
गुं बोजं ह्रीं अक्तिः, ॐ कोनकं परकाया प्रवेश
सिद्धिं प्रोत्यये मन्त्र जपे विनियोग ॥

मानस पूजन

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं—समर्पयामि
हं आकाशात्मकं पुष्पं
यं वायव्यात्मकं धूपं
रं वन्हात्मकं दीपं—दशयामि
वं श्रमतात्मकं नेत्रैव—निवेदयामि
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं

मुख मन्त्र

ॐ परात्परायै विनिर्मुक्तायै परकायै ह्रीं
कुलेश्वर्यै फट् ।

यह मन्त्र मात्र पांच लाख उस मन्त्र के सामने अपना
होता है, और मन्त्र जब समाप्ति के बाद जब सिद्धि प्राप्त
हो जाती है, तो योग विद्वत् जवाग्रन लगा कर परकाया
प्रवेश किया जा सकता है ।

वास्तव में ही यह श्रेष्ठ और गोपनीय साधना रहस्य
है, योग्य साधकों को इसमें भाग लेकर सकलता प्राप्त
करनी चाहिए ।

कोलायन कर नियन्त्रण हो जाता है, और अपने प्राणों
का प्रयोग कर के धन छोड़ता हुआ, पूर्ण प्राणों का
विनिर्मुक्त देह में सन्तार कर सकता है, और ऐसा कर के
उस मूल देह को जीवित कर देता है ।

जिस समय वह अपने प्राणों को विनिर्मुक्त करता है,
उस वृत्ति के विनिर्मुक्त अवधि का संकेत भी दे दिया
जाता है, और निश्चित अवधि के बाद बिना संकेत का
कोलायन जपे प्राण अपने मूल देह में आ जाते हैं, इस
कारण तक मुख्य विषय धरुक्ता रहता है, इस वजह से
हृदय की धरुक्ता रक्त संचार और मुख्य चेतना अनांतर
जो रहती है, इस क्रिया के वाध्यय से भी कई योगियों
न सफल सफलता प्राप्त की है, जिन में स्वामी पुराणानंद
योगी साक्षात्कार, स्वामी निर्मल देव चेतन्य तथा योगी-
नारायणनिरादि मुख्य हैं ।

परकाया प्रवेश और मन्त्र सिद्धि

जब यह कार्य पेशीदा है, अतः यदि किसी का
कार्यक्रम मिल जाय, तो ज्यादा उत्साह रहता है, अन्यथा
कोलायन व्यक्तिगत रूप से प्रयत्न करने भी 'परकाया प्रवेश
सिद्धि' प्राप्त करने में सफल हो सकता है ।

जोके में परकाया प्रवेश से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण
अवधि को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर रहा है, साधक स्नात
कर किसी भी गुण्य मन्त्र में यह साधना प्रारम्भ करें
जबने सामने 'परकाया प्रवेश सिद्धि मन्त्र' स्थापित
का दें, इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार की सामग्री
जिस भावि की आवश्यकता नहीं होती ।

सर्वप्रथम गुरु पूजन कर मन्त्र की पूजा करें, उस पर
हुं हुम्, अक्षत चक्रावे श्रीं शुद्ध धृत् का अक्षय्य दीपक
प्रज्वलित करें तत्पश्चात् विनियोग करें—

त साहित्य

व कृत)

गणव)

र)

वतकृत)

तापदेव)

विनुगानन्व)

व)

मद्रै तानम्)

गन्द)

विनिर्मुक्त)

विदानन्व)

एने पर इस

है, वे सभी

ने पर प्राप्त

वत है, एक

ग के द्वारा,

गणन करके

उसे अपने

पहचाने की

के निर्देशन

का परि-

उसे अपनी

आश्चर्यजनक शक्तियां छिपी हुई हैं

छठी इन्द्रिय में

छठी इन्द्रिय का तात्पर्य है, हमारे मन के 'रहस्यों' की स्मृत: ज्ञान लेने की क्रिया। हमारे शक्तियों में भी तीसरे मन का वर्णन-विवरण आया है, प्रथमान शिव को तो त्रिनेत्र कहा गया है, वह तीसरा नेत्र आतिरिक्त मन या ज्ञान नेत्र कहा जाता है। बाहरी दोनो आँखों तो नम्र चक्षु होती हैं, जिससे बाहर बाहर की सारी वस्तुएं भौतिक पदार्थ सादि देख सकते हैं, परन्तु इस तीसरे नेत्र के माध्यम से हम उन गुप्त रहस्यों को भी देख सकते हैं, जो सामान्यत: नम्र चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता, इस तीसरे नेत्र को 'माला चक्षु' कहा गया है।

कुण्डलिनी और तीसरा नेत्र

कुण्डलिनी जागरण जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है, हमारे पूरे शरीर में कुछ विशेष चक्र सन्निहित हैं, जो कि गुप्ता अवस्था में हैं, ये चक्र अन्दर की सारी चेतना को जागृत करने में समर्थ हैं, इसका प्रारम्भिक चक्र मूलाधार कहलाता है, इसके बाद स्वाधिष्ठान चक्र, विशुद्ध चक्र और आज्ञा चक्र होता है, मूलाधार चक्र गुदास्थान के पास सन्निहित है, विम स्वान के पास स्वाधिष्ठान चक्र नाभि में मणिपुर चक्र, हृदय पर अनाहत चक्र, कण्ठ में विशुद्ध चक्र तथा दोनो भौहों के मध्य में आज्ञा चक्र स्थित है, मूलाधार में सुषुम्ना मृतवत अवस्था में पड़ी रहती है, कुछ विशेष क्रियाओं से सुषुम्ना को जागृत

किया जाता है, जगते पर वह ऊपर की ओर उठती है, और उपरोक्त चक्रों को जेदती हुई, आज्ञा चक्र तक जा पहुँचती है, आज्ञा चक्र दो परमों से संयुक्त समस्त ब्रह्मांड का परिचायक है, आज्ञा-चक्र जागृत होते ही सात्विक की किसी भी व्यक्ति के जीवन के द्वारे में पुरा-पुरा ज्ञान हो जाता है, वह एक क्षण में ही उसके भूत-भविष्य और भविष्यकाल को जान लेता है। ऐसा बोनी इस स्वान पर बँटा-बँटा सम्पूर्ण विश्व की हलचल को अनुभव कर लेता है, वह उस आज्ञाचक्र के माध्यम से वह जान लेता है, कि आने वाले समय में संसार में कहां-कहाँ पर क्या-क्या घटनाएं घटित हो सकती हैं, इसी आज्ञा चक्र की शक्तियों में 'तीसरा नेत्र' कहा गया है, जो 'जो साहित्य में इसे 'थर्ड आई' कहते हैं, और इस विषय पर सँकरो पुस्तकें लिखी हुई हैं।

जो शक्ति तीसरा नेत्र या आज्ञा चक्र खुलने पर प्राप्त होती है, वही 'मिशन सेस' या छठी इन्द्रिय के माध्यम से भी व्यक्ति उन सारे रहस्यों को जान सकता है, जो संस्था अंगीचर, गोपनी और महत्वपूर्ण होते हैं, कई बार यह चेतना किसी-किसी को स्वतः प्राप्त हो जाती है, और कभी-कभी प्रयत्न करने पर इस चेतना को हस्तगत की जा सकती है।

जो सामान्यत: प्रत्येक व्यक्ति में होते बहुत कम में

जो बिलकुल होती ही है, जिसके आधार पर वह अनुमान लगाते हैं, तब ही जाता है, किसी व्यक्ति को देखते ही जानते हैं कि वह स्वतः मान देता हो जाता है कि यह व्यक्ति स्वतः ही है, अतः वह व्यक्ति घोसबाज है और जानते हैं कि वह बात सत्य उतरती है, ऐसी जेतना को ही छोटी इन्द्रिय कहा गया है।

यदि व्यक्ति कुछ भावना में भन के आन्तरिक जगत में कोई बात कह देता है, तो वह बात तुरन्त सम्भव हो जाता है, ऐसी क्रिया को ही हमारे शास्त्रों में ज्ञान का आशीर्वाद कहा है।

हिमायु का किस्सा विश्व विख्यात है, बालक हिमायु मृत्यु बीम पर पड़ा हुआ था, सारे दृष्टीमानों ने दवाइयाँ देने की कोशिशें की, परन्तु हिमायु बीम बीम मृत्यु के मुँह की ओर अग्रसर हो रहा था, उसके पिता बाबर ने अनुभव किया कि कुछ ही घण्टों में हिमायु को मृत्यु निश्चित है, तब बाबर उद्यम-बुद्धि से दवाइयाँ की, बीमार हिमायु के पंखों के चारों ओर लगे आन्तरिक प्रार्थना की कि वह हिमायु की जीवन दे दे, इसके बाद में हिमायु की बीमारी उसे दे गई थी, और इतिहास साक्षी है कि उस दिन से हिमायु बाबर की ओर लौट आया और बाबर उद्यम से दवाइयाँ बीमार लगा गया और कुछ ही दिनों बाद बाबर की मृत्यु हो गई, वह छोटी इन्द्रिय का उच्चतम उदाहरण है। इस कहानी में यह पष्ट हो गया कि जो काम हाथ, दृष्टि, या दवाइयाँ नहीं कर सकती वह काम बुद्धि कर दिखाती है।

मद्रास के पास त्रिचनापुर में बलियम्मा नाम की महिला रहती है, जिसकी उपाधि केवल त्रिचनापुर में ही नहीं परन्तु पूरे दक्षिण में है और नित्य हजारों लोग उससे मिलने के लिए आते हैं, इस महिला के पास किसी प्रकार की कोई साधना या सिद्धि नहीं है, वह स्वयं कहती है कि मैंने अपने जीवन में कोई साधना नहीं की, वह रोगी को अपने सामने बिठा देती है और

छोटी इन्द्रिय उसे बता देती है कि इस रोगी की क्या बीमारी है, और उसे क्या औषधि देनी चाहिए बलियम्मा तुरन्त ऐसी दवा पर से निकाल कर उसको खाने के लिए दे देती है या उसके शरीर पर लगा देती है और वह तुरन्त ठीक हो जाता है, ऐसे एक दो नहीं नित्य सैकड़ों अमरकार वहाँ पर घटित होते हैं।

एक बार एक रबी अपनी जवान लड़की को ले कर उसके पास आई और बताया कि उसके चेहरे पर सफेद दाग पड़ने अधिक बढ़ गये हैं कि चेहरा कुसंग होने लगा है, आतशाय के लोग इस लड़की से पूछा करने लगे थे, अब तो इसका विवाह भी असंभव है, और इस लड़की ने चुकी हो कर दो-तीन बार आत्म हत्या का प्रयास भी किया है।

बलियम्मा ने उसे अपने सामने बिठाया और कुछ शर्णा के लिए ध्यान मग्न हो गई, अनायास ही उसे एहसास हुआ कि इस सफेद दागों पर सिन्दूर लगाया जाय तो यह ठीक हो जलगी, शर्णा श्रोत्रों पर बलियम्मा ने धर से सिन्दूर निकाल कर उसे तेल में मला और लड़की के चेहरे के दागों पर लगा दिया और सर चले जाने के लिए कह दिया। दूसरे दिन उसकी माँ लड़की को लेकर बलियम्मा का धन्यवाद करने के लिए आई कि उसके प्रयत्नों से उसके चेहरे के दाग हमेशा के लिए समाप्त हो गये हैं और वह पुनः स्वस्थ तथा सुन्दर बन गई है।

एक बार एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बलियम्मा के सामने लाया गया जो दक्षिण का महत्वपूर्ण अभिनेता और राजनेता था, बलियम्मा ने उसे अपने सामने बैठ जाने के लिए कहा और स्वयं ध्यान मग्न हो गई, अनायास ही उसे उद्यम माने उस रोगी के शरीर का पूरा विश्व धिन गया जैसे कि कोई एकधरे - खिंट हो, और उसे एहसास भी हुआ, कि इस हृदय की बीमारी नहीं शक्ति इसके दोनो मुँहों में प्रजन है, मान ही मान उसे एहसास हुआ, कि यदि इसकी कपूर में काफ़ी धागा बांध

लिया जाय तो वह प्रसिद्ध राजनेता इस रोग से मुक्ति पा सकता है।

बलियम्मा ने ऐसा ही किया और एक सप्ताह के भीतर भीतर वह व्यक्ति पूर्णतः रोग मुक्त हो गया, उससे पूर्व की स्थिति जैसी रही और वह सर्वथा निरोग हो कर अपने काम में लग गया जो काम डाक्टरों की टीम और हजारों लोगों को प्रीति नहीं कर सकी वह मात्र एक कारे खाने ने कर दी, पर यह केवल काया प्राप्ति ही नहीं था अपितु हम के पीछे बलियम्मा के छोटी इन्द्रिय को जेतना शक्ति भी थी।

बलियम्मा तीसरी सदी सामान्य गृहस्थ महिला है और अधिकतर उसका समय पूजा पाठ में ही व्यतीत होता है, एक दिन जब वह पूजा पाठ कर रही थी तो उसे चेतना हुई कि वह रोगी को देखते ही उसके रोग के बारे में जान सकती है, और उसका उपाय भी कर सकती है, इसके बाद से उसने यह परोपकारी कार्य प्रारम्भ कर दिया, और आज उसके घर के सामने हजारों लोगों की भीड़ लगी रहती है।

एकाग्रता ही छोटी इन्द्रिय है

मन की एकाग्रता अपने आप में बहुत बड़ी शक्ति है, जिसके माध्यम से असंभव कार्य भी संभव किये जा सकते हैं, छोरे छोरे शान्त वातावरण में बैठ कर ध्यान लगाने पर ध्यान की एकाग्रता प्राप्त हो सकती है, इस पर पूरे विश्व में प्रयोग हो रहे हैं, और उन्हें आश्चर्यजनक सफलताएं प्राप्त हो रही हैं। रूस की महिला किरतान्या का नाम दूर दूर तक फैला हुआ है, मन की एकाग्रता के द्वारा वह झिलते हुए फेब्रुजम को रोक लेती है, टेबल पर पड़े हुए स्टील के घम्मच को मन को एकाग्र कर दोनों भागों से एक टुक देखकर चम्मच को अपने स्थान से सरका बेती है, पिछले नवम्बर में उसने मन की एकाग्रता का अद्भुत परिचय दिया, उसने खड़ी हुई कार पर मन एकाग्र कर दृष्टि डाली और

डाईवर को कार चलाने की आज्ञा दी, डाईवर ने बहुत प्रशंस किया इन्द्रिय तो पूरी शक्ति से चल रहा था परन्तु कार उस से मेल भी नहीं हो रही थी, वह किरतान्या ने अपनी मजरे कार से हटाई तभी कार को जिसका लकी यह मन की एकाग्रता का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

ठीक ऐसी ही महिला हर्श्वर की तीना बालेन है जिसकी चर्चा मात्र हर्श्वरम में ही नहीं, पूरे अमेरिका में है वह दो हजार मील दूर तक अपने मन की एकाग्रता की शक्ति से आदेश देती है, और वहीं पर आदेश का पालन होता है, हर्श्वरम में लाखों की हज़ार मील दूर सिन्गापी शहर में एक व्यक्ति के हृदय का आपरेण हो रहा था, तीना ने हर्श्वरम घंटे बंद कर उस हृदय की वृद्धन को कम या ज्यादा करके बता दिया, यही आपरेण के दौरान एक बार तो उस रोगी के हृदय में धड़कना ही बन्द कर दिया, टेलीफोन में सरासर बात-लाप चालु था, तीना बालेन ने वही बंद बंद निश्चय बन्द हृदय को चढ़ न की वापिस धड़कने का आदेश दिया और आपरेण देखल पर ही वह हृदय धड़कने लगा। और एक बार फिर वह प्रामाणित हो गया कि मन की एकाग्रता या छोटी इन्द्रिय में बहुत बड़ी शक्ति होती है, और इसके माध्यम से कठिन कार्य किये जा सकते हैं।

रूस और अमेरिका में छोटी इन्द्रिय पर परीक्षण

इस समय इन दोनों देशों में मन की एकाग्रता या छोटी इन्द्रिय की शक्ति को लेकर बराबर परीक्षण चल रहे हैं, और इसमें वे सफलता भी पा रहे हैं, अभी कुछ दिनों पहिले अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र में समाचार प्रकाशित हुआ था कि रूस ने मन की एकाग्रता या छोटी इन्द्रिय पर विशेष सफलता प्राप्त कर ली है और इसके माध्यम से पांच हजार मील दूर स्थित पतुदुबो के चासकों को आदेश देने में सफलता पा ली है, इस शक्ति

के सहारे बन्दूकों के चालकों को खतरों से, या बटनाओं से बचाने करा दिया जाता है, और इससे उनकी योग्यता भी बनी रहती है, यदि वह समाचार वायरलेस का कन्वेंशनी माध्यम से दिया जाता तो अमेरिका या अन्य देश उस समाचार को शीघ्र में ही पकड़ लेते और अपने नीतनीयता नहीं बनी रहती।

अमेरिका इससे विनित है, अपने को छोटी अस्त्रिक प्रयोगों में तेजी लाई है, और सफलता प्राप्त करने का दावा किया है, अभी कुछ दिनों पहले बिल गैमेल नामक वैज्ञानिक के द्वारा मण्डल ग्रह के आस-पास विचार करने वाले राकेट को मन की एकाग्रता से चादेश दिया और इसका तुरन्त चमत्कारिक अंतर हुआ, वह राकेट अपने परिक्रमा पथ से थोड़ा सा भटक गया था, और उसने बहुत बड़ा खतरा उपस्थित हो गया था, वैज्ञानिकों को तो आश्चर्य होने लगी थी, कि यह बात अपने स्वयं से भटक गया है, अतः इस पर नियन्त्रण प्राप्त करना कठिन है, और यह धारणा रखने का यान अंतरिक्ष में हो उस कर समाप्त हो जायेगा, दूसरी कोई शक्ति भी नहीं बची थी, जिसके द्वारा यान को सही रास्ते पर लाना जाता, पर पिछले दो वर्षों से बिल गैमेल मन की एकाग्रता पर परीक्षण कर रहा था, और मन की एकाग्रता पर अद्भुत सफलता प्राप्त कर सकने में सफल हो सका था, इसी के द्वारा वह लाखों मील दूर अतिदीप्त राकेट को आदेश दे सका और अपना आदेश सफल कर उसे सही रास्ते पर ला सका।

मन शक्ति से विलक्षण कार्य

भारत में इस अतोनिय शक्ति या मन शक्ति के सम्बन्धित चमत्कारी बातों से सैकड़ों ग्रन्थ भरे जा चुके हैं, अधियों ने वरदान देकर या आशीर्वाद देकर एक क्षण में कठिन से कठिन कार्य सम्पन्न कर दिखाये हैं, जो कुण्डलितो चक्र के रहस्यों को जान लेता है, यह मन की अतोनिय शक्तियों पर नियन्त्रण प्राप्त कर लेता है, ज्ञान में इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण प्रयोग किया

यह प्रयोग एक योगी पर किया गया था। जब उसने अपने स्वाधिष्ठान चक्र को जाग्रत किया तो उसके शरीर पर लगे यंत्रों ने बताया कि योगी के शरीर में विशेष ऊर्जा बढ़ रही है, और वह ऊर्जा इसी प्रकार से बढ़ती रही तो परमाणु बम से भी ज्यादा विस्फोट कर सकती है, स्वाधिष्ठान चक्र के जाग्रत के बाद यदि व्यक्ति किसी को प्रश्न का भाष दे देता है, तो सामने वाला व्यक्ति तुरन्त गिर कर समाप्त हो जाता है।

उस योगी के पूरे शरीर में वैज्ञानिक यन्त्र बंधे हुए थे, और उन यन्त्रों के माध्यम से ही यह जातकारी ली जा रही थी, कि शरीर स्थित स्थल-स्थल चक्रों के जाग्रत के किन प्रकार की शक्ति निमित्त होती है, जब उस योगी ने आकाश चक्र को जाग्रत किया तो वैज्ञानिक यन्त्रों के माध्यम से पता चला कि उसके शरीर में ईश्वर नामक पदार्थ का घनत्व बहुत अधिक बढ़ गया है, और उसके शरीर स्थित ईश्वर का पूरे ब्रह्माण्ड में फैले हुए ईश्वर से सम्बन्ध हो गया है, या दूसरे शब्दों में कहा जाय तो उस योगी में इतनी क्षमता प्राप्त हो गयी है, कि उस क्षण पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं पर होने वाली घटना की वस्तु भी देख सकता है, मनन सकता है, और उसमें हस्तक्षेप कर सकता है, इच्छा शक्ति और कुण्डलिनी जाग्रत का यह पूर्ण वैज्ञानिक आधार था।

बाद में जब योगी के शरीर पर से सारे यन्त्र हटा लिए और टोकियो भी प्रयोग शाला में बंद हुए, उस योगी को पूछा कि वह मन की एकाग्रता शक्ति से यह पता लगाये कि इस समय अमेरिका के न्यूयार्क स्थित वैज्ञानिक मि० कोच क्या कर रहे हैं ?

योगी ने मन को एकाग्र कर एक सैकण्ड में बताया कि डा० कोच अपनी प्रयोग शाला में मेडक के हृदय पर परीक्षण कर रहे हैं, टेलेकोन करके मालूम किया गया तो यह बात मौलूह जाने सही उत्तरी।

फिर उस योगी को कहा गया वह इस शक्ति से

प्रयोगशाला में टेबल पर पड़े हुए उस मंडक के हृदय को बन्द कर दें, योगी ने ध्यान एकाग्र कर ऐसा ही किया, और उसी क्षण शक्ति से सम्पर्क कायम किया गया तो योगी ने बताया कि मैं जिस के हृदय पर परीक्षण कर रहा था, वह अभी तक तो बंदक रहा था, पर दो चार मीनिट पहले ही उसने बंदकना बन्द कर दिया है, या दूसरे शब्दों में वह मंडक समाप्त हो गया है, बीच के पत्रों में जबकि ऐसे कोई जलण नहीं थे, कि वह हृदय बंदकना बन्द कर दें।

इसने योगी की इच्छा शक्ति और एकाग्रता शक्ति पर विश्वास हो गया और यह भी प्रमाणित हो गया कि इस छठे इन्द्रिय के माध्यम से हजारों मील दूर होती हुई घटनाओं को देखा जा सकता है, और उन घटनाओं में हस्तक्षेप किया जा सकता है।

कैसे होता है—छठे इन्द्रिय का जागरण

अनुसंधान शरीर में तीन प्रकार की शक्तियाँ होती हैं, १) भौतिक या शारीरिक शक्ति २) बौद्धिकशक्ति और ३) मनस्वशक्ति। व्यक्ति शारीरिक शक्ति का तो प्रयोग पिछले कई सौ वर्षों से करता आ रहा है, बीजा उठाना, परिष्कार करना, आदि, ऐसी ही शक्ति है, इसके अलावा अब मनुष्य पहले की अपेक्षा ज्यादा बौद्धिक शक्ति का उपयोग करने लगा है, यद्यपि वैज्ञानिकों के अनुसार अभी तक भी मानव अपनी बौद्धिक क्षमताओं या बौद्धिक शक्ति का ३० प्रतिशत से ज्यादा उपयोग नहीं कर पा रहा है, परन्तु मनस्वशक्ति के प्रयोग के बारे में तो वह अभी तक कोरा ही है, और केवल उसका पाँच प्रतिशत ही उपयोग करने में वह समर्थ हो सका है।

ध्यान, धारणा, समाधि या कुण्डलिनी जागरण के द्वारा ही इस मनस्वशक्ति का विकास होता है, धीरे-धीरे अभ्यास होता है, धीरे-धीरे अभ्यास करने पर यह मनस्वशक्ति वा मनस्वशक्ति बहुत अधिक बढ़ सकती है, इससे किछु शक्ति के सहारे व्यक्ति दूसरे के शरीरों को मिटा सकता है, संसार में कहीं पर होने वाली घटनाओं को देख सकता है, चुन सकता है, मनुष्य के मन की गोपनीय बातों को समझ सकता है, ऐसे व्यक्ति के लिए किसी का कोई रहस्य गोपनीय नहीं रहता।

साय कल्पना करें कि यदि कोई व्यक्ति मनस्वशक्ति के सहारे किसी स्त्री के भ्रूतकाल के रहस्यों को जान ले तो कितनी बड़ी हलचल हो सकती है, यदि सामने वाले व्यापारी या व्यक्ति के मन की बातों को जान ले तो बहुत बड़े धोले या विश्वासपात से बचा जा सकता है, यदि इस मनस्वशक्ति का प्रभाव बड़ा बिना जाय तो दूसरे राष्ट्र या पड़ोसी देश के राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री के दिमाग में क्या बातें छुमड़ रही है, इसका पता प्राप्त करने में लगाया जा सकता है, इसके द्वारा विरोधों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, युद्ध को अपनी शानानुसार चलने के लिए बाध्य किया जा सकता है, व्यापारिक को अपने मनोदुकूल व्याप दिलाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है, और किसी भी रहस्य को साक्षानी से जाना जा सकता है।

प्राचीन योगियों ने इसकी दो विधियाँ बताई हैं, कुण्डलिनी जागरण और शक्तियों को जागृत करने से अथवा नित्य आधा घण्टा किसी एकांत स्थान पर बैठ कर अज्ञात लगाने से। ध्यान लगाने के बाद उस शक्ति के सहारे

पाना दें और देखें कि करने के समर्थ हो म हुई घड़ी को रोकने सरकाने जैसी किया इस सर्वोच्च शक्ति सम्पन्न किये जा सक

योग पारासर भी दिया है, उस प प्रतीन्द्रिय शक्ति उम्होंने स्वीकार कि द्वारा छठी इन्द्रिय बनाया जा सकता

अतीन्द्रिय प्रय

यह प्रयोग प्रारम्भ करना थ विराम समय चारों लगभग शान्ति निमित्त 'प्रतीन्द्रिय रखता हुआ निश्च जप करता रहे, प्रयोग की जरूरत

ॐ

इस मन्त्र व से विशेष संबंध ऊर्जा उत्पन्न होती ऊर्जा साधक में

भाजा दें और देखें कि वह शक्ति कितना प्रभाव पैदा करने में समर्थ हो सकती है, पहले इसका प्रयोग चलती हुई घड़ी को रोकने या टेबल पर पड़े हुए चम्मच को सरवाने जैसी क्रियाओं से कर सकते हैं और धीरे-धीरे इस अतीन्द्रिय शक्ति को बढ़ा कर कठिन कार्य भी सम्पन्न किये जा सकते हैं।

योग पारस्पर में इसको संक्रामक विधि या प्रयोग भी दिया है, रूस और अमेरिका ने भी इन मन्त्र के सह रे अतीन्द्रिय शक्ति के विकास में सफलता पाई है और उन्होंने स्वीकार किया है कि इस मन्त्र और साधना के द्वारा छोटी इन्द्रिय की शक्ति की अत्यन्त क्षमता युक्त बनाया जा सकता है।

अतीन्द्रिय प्रयोग

यह प्रयोग नित्य प्रातः पाँच बजे के बाद-पास प्रारम्भ करना चाहिए, यह एक घण्टे का प्रयोग है, जिस समय चारों तरफ कोलाहल कम होता है, और लगभग शान्ति रहती है, तब अपने सामने ताँबे से निर्मित 'अतीन्द्रिय यन्त्र' को रख कर उसके मध्य में स्थित रखता हुआ निम्न मन्त्र का एक घण्टे तक बराबर मन्त्र जप श्रवता रहें, इस में किसी भा प्रकार की माया के प्रयोग की जरूरत नहीं है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं मनस् मणिभद्रे ह्रीं फट्

इस मन्त्र का तात्पर्य पर निर्मित 'अतीन्द्रिय यन्त्र' से विशेष संबंध है और इन दोनों के सहयोग से जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, उसे 'अतीन्द्रिय ऊर्जा' कहते हैं, यह ऊर्जा साधक में एकत्र होती रहती है, मात्र चार्जिंग



दिनों तक नित्य एक घण्टा प्रयोग करने से उसे आश्चर्य-जनक परिणाम प्राप्त होते हैं, अब तो रूस और अमेरिका के वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है कि इस मन्त्र के वक्तव्यार्थ से कुछ ऐसी सच्ची उत्पन्न होती है, जो साधने पड़े यन्त्र से टकरा कर साधक के शरीर में जा कर छोटी इन्द्रिय की जाग्रत करने में समर्थ होती है, और इससे व्यक्ति की छोटी इन्द्रिय जाग्रत होती है और उसके साहचर्य से अतिसंभव कार्य भी भी सम्भव करने की क्षमता प्राप्त होती है। *



आयुर्वेद

वह पल प्रतिपल सुन्दर होती जा रही है

संसार में किसी भी स्त्री की वो ही इच्छाएं रहती हैं कि वह सभी दृष्टियों से स्वस्थ व जीवनमय बनी रहे और सौन्दर्य आस्था की दृष्टि से वह पूर्ण सुन्दर हो। जिससे कि परपुरुषों के चित्त को आकर्षित करने में सफलता प्राप्त करें।

सुन्दरता भगवान का दिया हुआ, स्त्री जाति की वरदान है परन्तु आयुर्वेद भी भगवान का ही दूसरा स्वरूप है, "चरक संहिता" में एक जगह लिखा है, कि प्रभु जो भी सुन्दरता देता है वह तो सर्व्व स्वीकार किया जाता है, परन्तु आयुर्वेद के माध्यम से उस सुन्दरता में प्राश्नपूर्ण वृद्धि की जाती सम्भव है।

और वह सुन्दरी

समस्त आयुर्वेद के ग्रन्थों में यह कथा प्रसिद्ध है, कि राजा प्रोच के दरबार में एक अस्पृश्य ही सौम्य मेढाची और पक्ष वैश्य थे, जिनको धनवन्तरी का दूसरा अक्षर कहला जाता था। उनकी उम्र तो मात्र ४० वर्ष की ही थी, परन्तु इतनी छोटी सी उम्र में ही उन्होंने आयुर्वेद का भी ज्ञान प्राप्त किया था, यह अपने आप में अत्यन्तम था, दरबारी और उज्जैन नगरी के निवासी तो उनका सम्मान करते ही थे, महाकवि कालिदास ने भी अपने श्लोकों में यह स्वीकार किया है, कि वैश्याव विभूत के समान आयुर्वेदाचार्य न तो पृथ्वी पर पैदा हुआ, और न

आगे पैदा हो सकेगा, एक तरह से देवा ज्ञान तो उस रहा था जैसे धनवन्तरी स्वयं उसकी आत्मा में बैठे हुए हो, कालिदास के धलावा कवि वैश्याव प्रहित भाव, मण्डनमिश्र आदि ने भी विभूत के ज्ञान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है, और उनके आयुर्वेद ज्ञान का पूर्ण उपयोग किया है।

कालिदास महाकवि और विद्वान होने के साथ ही साथ सौन्दर्य पारखी भी थे, कवि हृदय होने के कारण उनका किसी से प्रेम संबंध बन गया और धीरे धीरे यह प्रेम-संस्थ बढता ही गया, सौन्दर्यवती पुष्पवल्ली की यादों कवि की काव्य रचना निखर आई थी, अब उनके काव्य में ज्यादा रस, ज्यादा भाव प्रवणता आने लगी थी, परन्तु कालिदास सामान्य कवि नहीं थे, सरस्वती उनके कण्ठ में निराजमान थी, कालिदास ने लगभग ती ते अधिक पछों की रचना पुष्पवल्ली के लिए की परन्तु उनके मन में एक कबोठ बराबर बनी रहती कि मैंने जिससे प्रेम किया है, वह निश्चय ही सुन्दर तो है, पर वह विश्व की सम्पन्न सुन्दरी नहीं है, किसी भी पुरुष से पुष्पवल्ली सौन्दर्य की साकार प्रतिमा बन सके, रसि की दूसरी प्रतिकृति बन सके, और उसका सौन्दर्य ऐसा दिग्-दिग् करता हो कि कोई भी उसको देखकर ठग सा रह जाय, तभी जीवन की पूर्णता है।

वे पुष्पवल्ली पर काव्य रचना तो करते, परन्तु फिर

भी उनके मन में काव्य सुन्दरता का पा रहा है, इस में चाहिए, वैसी गहरी सम्भव है, ज

एक दिन का के घर सुबह-सुबह बास ने पुष्पवल्ली को है, पर मैं चा प्रकाशपुंज ही।

आँखों में भी हुआ सा प्रतीत हो लचीली और कम इस प्रकार से दाँव भी व्यक्ति उनके और उसकी धवि हो जाय कि वह न सके, मैं पुष्पवल्ली बताये हुए सुगों जिसकी कोई यमा गया, पूरे भारतव

उसकी वाणी हो, पूरा चेहरा पुष्पाव की तरह कामदेव की भी पूरा समुद्र उस पतली सी ना के साथ-साथ दुला हुआ हो, कि

छोटी देव

भी उनके मन में यह कचोट रहनी कि जितनी गहराई के साथ सौन्दर्य का वर्णन होना चाहिए उतना नहीं हो पा रहा है, इस सौन्दर्य वर्णन में जितनी गहराई आनी चाहिए, वैसे गहराई आ नहीं पा रही है, और यह तभी सम्भव है, जब पुष्पवल्ली अनित्य सौन्दर्यवती हो।

एक दिन कालीदास अपने मित्र विद्यात वैद्य विद्युत के घर सुबह-सुबह पहुँचे और कुशलक्षेम के अनन्तर कालिदास ने पुष्पवल्ली के बारे में बताते हुए कहा—'यह सुन्दर तो है, पर मैं चाहता हूँ, उसका सौन्दर्य अपने आप में प्रकट हो जाय।'

अन्दरे में भी उसके शरीर से जीवन-प्रकाश निकलता हुआ सा प्रतीत हो, उसके सारे शरीर की बनावट नाजुक लचीली और कमनीय हो, सारे शरीर के अंग-प्रत्यंग इस प्रकार से ढाँचे में ढले हुए हो, कि संसार का कोई भी व्यक्ति उसे देखते ही क्षण भर के लिए ठिठक जाय और उसकी छवि उसके दिमाग पर इस प्रकार से अंकित हो जाय कि वह जीवन भर उसके सौन्दर्य को भुलान सके, मैं पुष्पवल्ली की भारतीय सौन्दर्य शास्त्र में बताते हुए गुणों के अनुरूप सुन्दर बनाना चाहता हूँ, जिसकी कोई समानता ही न हो, उसके समान उज्जैन तो गया, पूरे भारतवर्ष में कोई सुन्दरी न हो।

उसकी बाणी में मधुरता हो, आँखों में कदीलापन हो, पूरा चेहरा प्रातःकाल भीम हुआ सीमा से प्रभावित गुलाब की तरह खिलता हुआ हो, वक्षस्थल रत्ति और कामदेव की भी मात करने वाला हो, ऐसा लगे कि जैसे पूरा समुद्र उमड़ कर आ रहा हो, मुट्ठी में घाते लायक पतली सी नाजुक कमर हो, और उपयुक्त कद के साथ-साथ सारा शरीर कुछ ऐसे अनुपात में ढला हुआ हो, कि जिसे पूर्ण सौन्दर्य कहा जाता है।

कोई देर न कर कालीदास ने विद्युत की ओर

देखा, और कहा—'मैं आशुच नहीं हो रहा हूँ, पर मैंने आप के गुणों की चर्चा तुनी ही नहीं अपितु देखी भी है, राजा भोज की राजकुमारी को आपने जिस प्रकार से सौन्दर्य प्रदान किया है वह अपने आप में बेबाग है, परन्तु मैं उस राजकुमारी से भी ज्यादा सौन्दर्य सुकुमारता, लज्जा शोभिता, और प्रभावोत्पादकता पुष्पवल्ली में देखना चाहता हूँ।'

फिर कहीं खोते हुए से कालीदास ने कहा—'आप कुछ ऐसा कीजिये कि उसके बात करने की तरह बहाने हुए काले और घने हो, ललाटे दिप् दिप् करती हुई प्रभाव पैदा करने में समर्थ हो, दोनों आँखें इतनी गहरी और झोल की तरह स्वच्छ हो, कि जो भी उसे देखे अपने आपमें ही डूब जाय, कानों तक पैली हुई उन सुन्दर आँखों की तुलना ही न हो।'

छोटी सी सुन्दर नासिका और उसके नीचे दो नाजुक पतले और हलके सुन्दर होठ हो, कि जैसे गुलाब की पंखुरी पर दूसरी पंखुरी रख दी हो, और उसके चिबुक का गड्ढा इतना आश्चर्यजनक हो कि सारे संसार के पुरुष उसमें कूद पड़ने के लिए आतुर हो, मैं चाहता हूँ कि जब वह मुस्कुराये तो गालों में गड्ढे पड़े जब वह किसी की विरही नजर से देख ले तो वह वहीं भर मिटे।

विद्युत ने कहा—'महाकवि कालीदास आप को कवि होते जा रहे हैं, आप.....'

बात की बीच में ही वादने हुए, कालीदास बोले मैं तुम्हें को दिवा देना चाहता हूँ कि सौन्दर्य क्या होता है मैं राजकुमारी के रूप गर्व को खंडित करना चाहता हूँ, मैं उसे बता देना चाहता हूँ, कि उससे भी ज्यादा सुन्दर उज्जैन नगरी में विद्यमान है, पुष्पवल्ली की गर्जन हसिनी के समान उठी हुई और पारदर्शी हो वक्षस्थल ज्वार की तरह उमड़ा हुआ हो, जो पूरे संसार को और जीवन को मिटा देने के लिए आतुर हो, उसका उदर अत्यन्त ही आकर्षक हो, जिस पर ताभी ऐसी

प्रतीत हो मानों कामदेव स्वयं उसमें छुन कर बैठे हो, पतली सी नाजुन कमर इतनी अधिक लचीली हो, कि चलने पर सी बार लटक कर चू जाय।

फिर कुछ दक का कालीदास बोले—विश्रुत, उसकी जमाने हृस्तीकुण्ड की तरह आनुपातिक ही, छोटे-छोटे आकर्षक और सुन्दर पर ऐसे हो कि जैसे धरती पर चलने पर मँते से ही जायेंगे उसकी नाज में एक मन्दर गति हो कि जैसे छलछलाती हुई, नदी बह रही हो, सारा शरीर एक साथ में इला हुआ आकर्षक, बिज्य अन्तिम ही रात्रि में भी उसके शरीर के सौन्दर्य से प्रकाश सा फैला हुआ अनुभव हो। जारों में पद्मिनी नारी के शरीर से निकलती हुई जिस मादक गन्ध का वर्णन शास्त्रों में है, मैं चाहता हूँ कि पुष्पवल्ली के शरीर से भी ऐसी ही सुगन्ध निरन्तर प्रवहित हो।

वह आपने आपमें सौन्दर्य की साकार पुंज हो, उसका कद पूर्ण और उसके चेहरे का प्रभाव अद्वितीय हो और मैं समझता हूँ कि मेरे इस स्वप्न को तुम ही साब्यंक कर सकते हो, मैंने राजकुमारी की साधारणता भी देखी थी, और आपके द्वारा दिये गये पाक सेवन से उसके बदले हुए परिवर्तित सौन्दर्य की भी देख रहा हूँ, आपने आपमें वह सौन्दर्य शालिनी बन गयी है, पर विश्रुत, सौन्दर्य की यह अन्तिम पराकाष्ठा नहीं है, सौन्दर्य तो इससे भी आगे बढ़ा-बड़ा हो सकता है, और मैं ऐसा ही सौन्दर्य पुष्पवल्ली में देखना चाहता हूँ, जिसके सौन्दर्य से पूरा पुरुष वर्ग बधा हुआ रहे जिसकी मुस्कान से व्यक्ति पागल हो जाय, जिसके छोटे से घूँघंग से सामने वाला कांप कर रह जाय, और तुम्हारे पास इसीलिए आया हूँ कि तुम्हें मेरा अनुरोध स्वीकार करना ही होगा और जो श्रोत्रिणी बना कर खाने के लिए आपने राजकुमारी को दी है, उससे भी श्रेष्ठ एवं अद्वितीय श्रोत्रिणी आप पुष्पवल्ली के लिए बनाये, मैं चाहता हूँ कि मेरी प्रिया विश्व में अत्यन्त ही अग्रतिम हो, अद्वितीय हो।

विश्रुत कुछ क्षण चिन्तनग्रस्त हो गये, लगभग पा

साल मिनटों के बाद वे धैर्यपूर्ण हुए और बोले—महाकवि कालीदास ! आप विश्व के अद्वितीय कवि और सौन्दर्य पारखी हैं, आप पर हमको ही नहीं पूरी धारणाएँ लगे गयी हैं, आप जीवन में पहली बार अनुरोध लेकर मेरे पास आये हैं, मुझे ऐसी ही एक श्रोत्रिणी का ज्ञान है, जिसे अभी तक बनाकर किसी को नहीं दी है, वह देवता से ही प्राप्त श्रोत्रिणीकल्प है जो सारे सौन्दर्य का पूर्णतः कायाकल्प करने में सक्षम है, इस श्रोत्रिणी को बनाने में लगभग तीस दिन मुँ लग जायेंगे।

परन्तु ऐसी श्रोत्रिणी विश्व की अत्यन्त श्रोत्रिणी ही कही जा सकती है, जिसे पाने के लिए उर्वशी मेनका और रम्भा भी लालाचिन है, जिस प्रकार से आपने पुष्पवल्ली का सौन्दर्य कल्प करने के लिए कहा है, उससे भी ज्यादा सौन्दर्यशालिनी वह हो सकेगी, यह श्रोत्रिणी कल्प है, जिसका नित्य ही सेवन करना होता है, मात्र तीस दिनों के सेवन से पूरे शरीर का सौन्दर्य कायाकल्प का तरह परिवर्तित हो जाता है और वह सारी श्रोत्रिणी में सौन्दर्य की साकार पुंज बन जाती है, अभी तक ऐसी श्रोत्रिणी मैंने राजकुमारी से क्या किसी को भी बनाकर नहीं दी है, परन्तु आपके लिए मैं इस श्रोत्रिणी का निर्माण अवश्य करूँगा आप एक महीने के बाद मेरे पास आएँ, मैं आपकी मनोवांछित वस्तु अवश्य ही आपको दूँगा।

सन्तुष्ट होकर कालीदास अपने घर चले गये, इसकी खर्चा किसी को नहीं थी, वे पुष्पवल्ली को आश्चर्यचकित कर देना चाहते थे, अगर प्यार जीवन का सौन्दर्य नहीं हो, अगर प्यार विश्व का अत्यन्त और अद्वितीय नहीं हो तो फिर प्यार का महत्व ही क्या, मूल्य ही क्या, इसके लिए तो पूरी सम्पत्ति और जीवन भी समान हो जाय पर ऐसा सौन्दर्य अनुपम रह सके तो वह इतिहास की धरोहर बन जाती है।

विश्रुत ने देवताओं में भी सर्वश्रेष्ठ भगवान शिव के आत्म स्वरूप आयुर्वेद के आधार अस्मिनी कुमार से प्राप्त सौन्दर्य कल्प का निर्माण प्रारम्भ किया, बाद में

विश्रुत ने सौन्दर्य कल्प की, जो भोजपुरी भाषा में जर्मनी के यह पुस्तक गोपनी से ऊँचे दामों में

इसमें उस शरीर के समस्त को कायाकल्प हो का कायाकल्प हो वाली महिला वि

इसमें बली है, जिसके नाम है सारमलि (४) म (७) हसपदी श्रवतिक्ता (११) वचनगन्धा (१४) जया (१७) स्व (२०) मुक्ताग्र (२३) कामरूप (२६) चक्रमर्द (२७) बल्लरी (३०) श्रिपती।

ये नाम सारमलि है, वचन गये है।

विश्रुत ने श्रिपती के माध्यम से जिसकी पूरी वि पुस्तक तो जर्मनी नेपाल के राज्य श्रीमृत भाषा की प्रतिलिपि करने

विश्रुत में 'सौन्दर्यकल्प' नाम से छोटी ही पुस्तक को रचना की, जो मोहनपुर पर प्रकाशित है, दुर्भाग्य से यह पुस्तक आज भी जर्मनी में सुरक्षित है, अर्थात् जो के समय में यह पुस्तक गोपनीय हथ से इंग्लैण्ड चली गयी और वहाँ से ऊँचे वामों में जर्मनी के हाथों पहुँच गयी।

इसमें उस औषधि का सागोपाग वर्णन है, जिससे शरीर के समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, पूरे शरीर को कायाकल्प हो जाता है, और दूसरे शब्दों में सौन्दर्य का कायाकल्प होकर इसके सेवन करने वाली सौभाग्य-शाली महिला विश्व की अविनश्य सुन्दरी बन जाती है।

इसमें असीस आयुर्वेदिक औषधियों का समावेश होता है, जिसके नाम हैं— (१) रुद्रपुष्पा (२) शृगाटक (३) शाल्मलि (४) मधुरिका (५) सूर्यकान्त (६) सोमवल्लरी (७) हंसपदी (८) हस्तिगुह्यी (९) हीरक (१०) यमलिकता (११) लज्जापु (१२) लक्ष्मणा (१३) वसगन्धवा (१४) संखपुष्पी (१५) शिलाजाम्बु (१६) सर्व-जया (१७) स्वर्णवल्लरी (१८) मत्स्याक्षी (१९) बालकंद (२०) मुक्तामय (२१) अग्निशिखा (२२) कपीतपदी (२३) कामरूप (२४) कुरंदक (२५) ज्योतिष्मति (२६) चक्रमर्द (२७) हरिताम्र (२८) पारद (२९) अगार-चलरी (३०) गन्धमादनी (३१) वंशमल्लिका (३२) श्रिवती।

ये नाम संस्कृत में हैं पर ये आयुर्वेदिक औषधियाँ प्राप्य हैं, पर इनके नाम समय के अनुसार बदल गये हैं।

विश्रुत ने अपने इस ग्रन्थ में इन आयुर्वेदिक औषधियों के माध्यम से 'सौन्दर्य पाक' का निर्माण किया जिसकी पूरी विधि इस पुस्तक में प्राप्य है, यद्यपि मूल पुस्तक तो जर्मनी में है, परन्तु मुझे इसकी एक प्रति नेपाल के राज्य संग्रहालय में देखने की मिली थी मैं श्रीपुल बाबा जी का ध्यामारी हूँ कि उन्होंने मुझे इसकी प्रतिलिपि करने की अनुमति दी।



इस पुस्तिका में 'सौन्दर्य पाक' बनाने का प्रामाणिक और पूर्ण विवरण दिया है जो कि इस दृष्टि से विश्व का एक मात्र ग्रन्थ है और दूसरे शब्दों में कहें तो विश्व की यह सन्नितीय पाक औषधि है, जो अपने आपमें पूर्ण प्रामाणिक और तुरन्त सफलता प्रदान करने में समर्थ है।

विश्रुत ने औषधि बना कर कालोदास को दे दी और कालोदास ने उस पाक का सेवन पुष्पवल्लरी को अपने सामने कराया, तीसरे चौथे दिन से ही उसकी काया में निखार आने लगा, शरीर स्थित रोग समाप्त होने लगे और काया में परिवर्तन आने लगा, दस दिन बाद ही ऐसा लगने लगा कि वह कोई और पुष्पवल्लरी है,

कालीदास ने मनोयोगपूर्वक पूरे तीस दिन तक नियमों के अनुसार उस सौन्दर्य पाक का सेवन पुष्पवल्ली को कराया और तीस दिन बीतते-बीतते वो ऐसा लगने लगा मानो पुष्पवल्ली आकाश से उतरी हुई साक्षात् रति हो, जिसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती, सारी उर्जन नगरी में उसके सौन्दर्य की चर्चा होने लगी, केवल उर्जन नगरी में ही नहीं दूर-दूर तक उसके सौन्दर्य की चर्चा फैल गयी, लोग केवल उसकी भलक देखने के लिए व्याकुल थे, राजकुमारी ने भी पुष्पवल्ली को बुला कर देखा और उसको देखने के बाद उसे अपना सौन्दर्य फीका और निष्तेज लगने लगा, उसी दिन से राजकुमारी इस सवमे के कारण बीमार पड़ गयी और खाट पकड़ ली।

राजा भोज को भी यह कहता पड़ा कि सखार में सौन्दर्य तो मैंने कई बार देखा है, पर पुष्पवल्ली का सौन्दर्य अद्वितीय है, अग्रिम है, इस सौन्दर्य के सामने मेनका और उर्वशी भी तुच्छ हैं।

पर यह रहस्य कालीदास और विधूत के अलावा किसी को भी ज्ञात नहीं था, आगे चलकर कालीदास ने 'पुष्पवल्ली सौन्दर्य' नाम से एक ग्रन्थ की रचना की जो सौन्दर्य शास्त्र की दृष्टि से अद्वितीय है, पूर्ण कवित्व कवि के सहारे कालीदास ने पुष्पवल्ली के तन्त्र-विद्य का वर्णन इस ग्रन्थ में किया है, और यह ग्रन्थ आज भी सौन्दर्य काव्य की दृष्टि से अद्वितीय माना जाता है।



"सौन्दर्य पाक" निर्माण विधि

मेरे पास विधूत की सौन्दर्यकल्प नामक पुस्तक की प्रामाणिक प्रति उपलब्ध है और उसके अनुसार इसका निर्माण कर जिस-जिस को भी इस औषधि का सेवन कराया है, एक सप्ताह में ही इसके आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

पीछे जो बत्तीस आयुर्वेदिक औषधियों का विवरण आया है, उन सब को कूट-पीस कर पाउडर की तरह बना कर अलग रख दें, और फिर औषधि को अलग-अलग भाँवले के रस में घोटें, भाँवले ताजे और पके हुए होने चाहिए, जब सभी औषधियों को अलग-अलग घोट ले सब सबको एकत्र कर बड़ी खरल में लगभग छः घण्टे उसे घोटें और एक रस कर दें।

इसके बाद शुद्ध पारद को मोघन कर मात्र पांच रत्ती पारा लोह रहित बना कर इस पूरे कल्प में उसे घोटें और एक रस कर दें, घोटते समय इस बात का ध्यान रहे कि इस कल्प में किसी प्रकार की चाँदनी न रहे, इसके बाद पूरी सामग्री को एक मलमल के कपड़े में बाँध लें और बड़ी कड़ाही में बीस किलो पानी डाल कर उसमें यह पोटली लटका दें, इस बात का ध्यान रहे कि यह पोटली कड़ाही के तल को छूने न पावे, और आंच जला कर इसे पकावे, जब पानी कम पड़ जाय तो कड़ाही में और पानी डालें, लगभग आठ घण्टे में यह कल्प पक जाता है।

फिर पोटली खोल कर इस सामग्री को बाहर निकाल दें और इसमें आधा किलो शहद डाल कर फिर घाटें तो यह सुन्दर कल्प तैयार हो जाता है, फिर इस कल्प की चने के आकार की गोलियाँ बना लें और निम्न दो गोली मुखह शाम सेवन करें, गोली लेने के बाद आधा किलो दूध पीये तो वह तीस दिनों में अद्वितीय सुन्दरी बन जाती है। ●

शिव महामृत

श्रावण
नाथ की सावन
है, भगवान शि
दिया था भग
कर ली थीं, कु
दृष्टि बनने का

यका
क्रियाओं से स
श्रावण महीने
वास
अपने जीवन
एक
नहीं चाहेंगे।

पोडशी सि

सा
साधना ती
साधनाएँ व
जा सकता
लेता है, व
और बोधि
हजारों सि

ऐसी साध

कोटि के

आपके ज

प्रत्यक्ष सिद्धि साधना

शिव महामृत्युंजय साधना १३.७.८७ से १८.७.८७ तक

श्रावण महीना तो भगवान शिव का सिद्धिदायक महीना है, जब भगवान भोले नाथ की साधना करने से वे एक पल में प्रसन्न होकर भक्त की सारी इच्छाएं पूरी कर देते हैं, भगवान शिव की साधना तो रावण ने सम्पन्न कर अपनी लंका को सोने की बना दिया था भगवान श्रीराम ने भोलेनाथ रामेश्वरम् की पूजा करके लंका पर विजय प्राप्त कर ली थी, कुबेर ने शिव साधना कर अखण्ड धन सम्पत्ति प्राप्त कर देवताओं का कोपा-ध्वंस करने का गौरव प्राप्त किया था।

अकाल मृत्यु निवारण, शत्रुमारण, शिव सम्मोहन, शंकर वशीकरण आदि क्रियाओं से सम्बन्धित यह शिविर संसार का दुर्लभ शिविर कहा जाता है, और वह भी श्रावण महीने में, ऐसा सुयोग तो जीवन में प्राप्त हो ही नहीं सकता।

वास्तव में ही जो सौभाग्यशाली है, वे ही इस अद्वितीय शिविर में भाग लेकर अपने जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण कर सकेगा।

एक ऐसी साधना जो आपके जीवन का सौभाग्य है, और जिसे आप छोड़ना नहीं चाहेंगे, सूक्ष्म गोपनीय मन्त्रों और रहस्यों के साथ।

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना

साधनाएं तो संसार में सैकड़ों हैं, मगर षोडशी त्रिपुर सुन्दरी जैसी महाविद्या साधना तो जीवन का सौभाग्य कहा जा सकता है, इस एक साधना में ही एक सौ आठ साधनाएं समाहित होती हैं, इस एक साधना के द्वारा ही समस्त सिद्धियों को प्राप्त किया जा सकता है, शास्त्रों के अनुसार जो षोडशी त्रिपुर सुन्दरी महाविद्या साधना सिद्ध कर लेता है, वह कुबेर के समान धनी, इन्द्र के समान साम्राज्यपति कामदेव के समान सुन्दर और योगियों के समान सर्वसिद्धि युक्त परम योगी बन जाता है, जिसके चरणों में हजारों हजारों सिद्धियां न्यीछावर रहती हैं।

वह श्रमाग्राही होगा, जो ऐसी महाविद्या साधना शिविर में भी भाग न ले सके, ऐसी साधना तो जीवन में सौभाग्य उदय होने पर ही प्राप्त हो सकती है।

एक महाविद्या साधना जो समस्त संसार में हलचल मचा देने वाली और उच्च-कोटि के योगियों के लिए भी दुर्लभ है।

गोपनीय सिद्धिदायक मन्त्रों और रहस्यों ने ओत-प्रोत एक ऐसी साधना, जो आपके जीवन का सौभाग्य कही जा सकती है।

विश्व की दो महान साधनाएं

जून १९८७ में

क्या आप इन शिविरों में भाग ले रहे हैं
यदि हां, तो निश्चय ही आप सौभाग्यशाली हैं।

हनुमान प्रत्यक्ष सिद्धि शिविर

१५-६-८७ से २०-६-८७ तक

सर्वथा मौलिक अप्रकाशित तंत्रों-मंत्रों से युक्त अद्वितीय
सिद्धि शिविर, जो वास्तव में ही समस्त दुखों से छुटकारा दिलाने
में समर्थ है....एक दुर्लभ शिविर जो विशेष रूप से आपके लिए है।

मातंगी महाविद्या सिद्धि शिविर

२२-६-८७ से २७-६-८७ तक

समस्त सिद्धियों को देने वाली, एक ऐसी महाविद्या साधना, जो प्रत्येक
साधक करता है, जिसको उपासना तो प्रत्येक योगी करना चाहता है. जिसके
प्रत्यक्ष दर्शन की इच्छा तो जन-जन की भावना है।

फिर आप ऐसे अद्वितीय शिविर में भाग लेने से वंचित क्यों रहे, ऐसा
अवसर शायद ही सम्भव हो।

एक से एक बढ़कर साधना सिद्धियां शिविर

भाग लें, समाज के श्रेष्ठी जन बनें

सम्पर्क—मानव-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान डा० श्रीमाषी मार्ग, हार्दिकोट कोलोनी, जोधपुर (राज.)

